DAILY ASSAM

छठा अध्याय

रचना

1. रचना-परिचय

रचना का अर्थ

रचना से तात्पर्य है अपने भावों को वाक्यों के द्वारा सूचित, समुचित क्रम से विन्यास करना। हम अपने विचारों को वाक्यों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। वाक्यों का समूह ही एक भाषा का रूप ले लेता है। भाषा का वक्ता और श्रोता दोनों पर प्रभाव पड़ता है। भाषा जितनी सरल-सहज होगी, उसे पढ़ने में उतनी ही सरलता होगी।

रचना-तत्व

1. सामान्य अशुद्धियों के प्रति सर्तकता।
2. विशेष शब्द और समूह का प्रयोग।
3. मुहावरे और कहावतों की जानकारी और प्रयोग।
4. अनुवाद-कला की सामान्य जानकारी।
5. पत्र-लेखन और निबंध-लेखन का व्यावहारिक ज्ञान।
   (आदर्श पत्र और निबंधों सहित)

यदि हम ऊपर के पाँच तत्वों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लें तो हिंदी भाषा को सरलता से बोल और लिख सकते हैं तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण कर सकते हैं।

विशेष शब्द और शब्द-समूह का भी भाषा में विशेष महत्व होता है। मुहावरों और कहावतों का भी रचना में विशेष महत्व है।

पत्र-लेखन और निबंध-लेखन भी भाषा के मुख्य आधार हैं। पत्र और निबंध की भाषा भी ठोस, गठित और प्रभावोत्पादक होती है। इसलिए पत्र- लेखन का अच्छा अभ्यास होना चाहिए और अनेक प्रकार के निबंध पढ़कर सुगठित भाषा में निबंध लिखना चाहिए।

ऊपर के सभी तत्व व्यावहारिक भाषा-ज्ञान के लिए महत्वपूर्ण है। इनके अभाव में कोई भाषा कमजोर और निष्प्राण हो जाती है। राष्ट्रभाषा को प्रभावशाली और अपने विचारों को शुद्ध और प्राणवान भाषा के रूप में प्रकट करने के लिए ऊपर सभी तत्वों की सामान्य जानकारी होना आवश्यक है, क्योंकि इन तत्वों से ही हमारी भाषा-संबंधी सृजनात्मक शक्ति बढ़ती है।

भाषा को ओज, पूर्ण बोधगम्य और सहज बनाने वाले तत्वों को रचना-तत्व कहते हैं।

अभ्यास

1. 'रचना' से तुम क्या समझते हो?
2. 'रचना' के प्रमुख तत्व कौन-कौन से हैं?
3. 'रचना' से हमें क्या लाभ होता है?
4. 'रचना' का संबंध भाषा से है। - इस वाक्य को स्पष्ट करो।

2. भाषा संबंधी सामान्य अशुद्धियाँ

सम्मोच्चरित शब्दों का प्रयोग

हिंदी में संस्कृत आदि से आए हुए शब्द की सभी ध्वनियों का उच्चारण आजकल नहीं हो रहा है। इसलिए उच्चरित और लिखित शब्द रूप में भी अंतर आ जाता है।

अत: इस प्रकार के शब्दों की उच्चारण-संबंधी विशेषताओं की जानकारी रखते हुए उसका प्रचलित रूप ही लिखना चाहिए। जैसे-

(अ) शब्द संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी	गनना	गणना	पुन्य	पुण्य
अद्वितिय	अद्वितीय	गनित	गणित	प्रज्जवलित	प्रज्ज्वलित
अध्यन	अध्ययन	गुणि	गुणी	प्रदेशिक	प्रादेशिक
अनाधिकार	अनधिकार	गौन	गौण	प्रमाणिक	प्रामाणिक
अनिष्ठ	अनिष्ट	जत्न	यत्न	प्रशंशा	प्रशंसा
अनुकुल	अनुकूल	जेष्ठ	ज्येष्ठ	प्रान	प्राण
अनुशरण	अनुसरण	तलाब	तालाब	बुढ़ा	बूढ़ा
अभ्यस्थ	अभ्यस्त	स्वास्थ	स्वास्थ्य	बह्मा	ब्रह्मा
अस्थान	स्थान	दिपिका	दीपिका	भय्या	भया
कनिष्ट	कनिष्ठ	देहिक	दैहिक	शक्ती	शक्ति
कन्हय्या	कन्हैया	नारायन	नारायण	शताब्दि	शताब्दी
कलस	कलश	नारि	नारी	संसारिक	सांसारिक
कल्यान	कल्याण	निरिक्षण	निरीक्षण	समीती	समिति
कुशाशन	कुशासन	पत्नि	पत्नी	सिंदुर	सिंदूर
केंद्रीयकरण	केंद्रीकरण	परिक्षा	परीक्षा	सृंगार	श्रृंगार
कोतुहल	कौतूहल	पुज्य	पूज्य	स्वास्थ्य	स्वास्थ्य

(आ) प्रत्यय संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अध्यात्मक	आध्यात्मिक	गायका	गायिका	वास्तविक में	वास्तव में
आलस्यता	आलस्य	गोपिनी	गोपी	शक्तिवान	शक्तिमान
ऐक्यता	एकता	ज्येष्ठी	ज्येष्ठा	साम्यता	साम्य
कौशलता	कुशलता	तरुणा	तरुणी	सौंदर्यता	सुंदरता
दशरथि	दाशरथि	पिशाचिनी	पिशाची	सिंहिनी	सिंही
निश्चयता	निश्चय	विदुषा	विदुषी	सुलोचनी	सुलोचना
भाग्यमान	भाग्यवान	माधुर्यता	मधुरता	श्रीमान् महारानी	श्रीमती महारानी
कुशांगिनी	कृशांगी	मान्यनीय	माननीय	साधुनी	साध्वी
कोमलांगिनी	कोमलांगी	मेत्रता	मित्रता		

(इ) संधि समास संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अत्याधिक	अत्यधिक	सन्मुख	सम्मुख	निर्गुणी	निर्गुण
आविस्कार	आविष्कार	सन्यासी	संन्यासी	निर्दयी	निर्दय
उपरोक्त	उपर्युक्त	सम्वाद	संवाद	पिताभक्ति	पितृभक्ति
तदोपरांत	तदुपरांत	स्वयम्बर	स्वयंवर	मंत्रीमंडल	मंत्रिमंडल
निरोग	नीरोग	दुरावस्था	दुरवस्था	माताहीन	मातृहीन
यशलाभ	यशोलाभ	निरापराध	निरपराध	विद्यार्थिगण	विद्यार्थीगण
विछेद	विच्छेद	निरव	नीरव	सकुशलपूर्वक	सकुशल
शिरमणि	शिरोमणि	निरस	नीरस	सानंदित	सानंद
सदोपदेश	सदुपदेश	कृतघ्नी	कृतघ्न	स्वामीभक्त	स्वामिभक्त
सन्मान	सम्मान				

(ई) हलंत, चंद्रबिंदु और अनुस्वार अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अर्थात	अर्थात्	श्रीमान	श्रीमान्	चांद	चाँद
अष्टम्	अष्टम	परिषद	परिषद्	जहां	जहाँ
दशम्	दशम	पांचवाँ	पाँचवाँ	जाउँगा	जाऊँगा
पंचम्	पंचम	आंख	आँख	दांत	दाँत
पृथक	पृथक्	उंगली	उँगली	दोनो	दोनों
भागवत्	भागवत	ऊंचा	ऊँचा	हंसना	हँसना
विद्यमान्	विद्यमान	गाँधीजी	गांधीजी		

वाक्यगत अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
तलवार एक उपयोगी अस्त्र है।	तलवार एक उपयोगी शस्त्र है।
राम और सीता आ रही है।	राम और सीता आ रहे हैं।
बच्चा माँ के बगल में बैठा है।	बच्चा माँ की बगल में बैठा है।
रमेश को चार गायें हैं।	रमेश की चार गायें हैं।
उमेश को एक लड़की हुई।	उमेश की एक लड़की हुई।
राम, सीता और मैं जाऊँगा।	राम, सीता, और हम जाएँगे।
मैं अपने मित्र को दो रुपये दिये हूँ।	मैंने अपने मित्र को दो रुपये दिये हैं।
इस पत्र को किसने लिखा है ?	यह पत्र किसने लिखा है ?
मुर्गी ने छै अण्डा दिया।	मुर्गी ने छः अण्डे दिये।
कोई-कोई ऐसा भी कहता है।	कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं।
मैं, वह और तुम शहर जाओगे।	हम, तुम और वे शहर जाएँगे।
मैंने रोटी को खाया।	मैंने रोटी खायी ।
इस समय आपकी आयु क्या ?	इस समय आपकी आयु कितनी है ?
मेरा नाम श्रीउमाराम कलिता है ?	मेरा नाम उमाराम कलिता है।

कृपया आप ही पत्र लिखने की कृपा करें।	कृपया आप ही पत्र लिखें।
कल तुम जरूर वापस लौट आना।	कल तुम जरूर लौट आना।
आप दोनों को परस्पर आपस में नहीं लड़ना चाहिए।	आप दोनों को आपस में नहीं लड़ना चाहिए।
सब लोग अपनी बात कहें।	सब लोग अपनी-अपनी बात कहें।
मैं उनसे यह बात मना लूँगा।	मैं उनसे यह बात मनवा लूँगा।
वह दो महीना से बीमार है।	वह दो महीनों से बीमार है।

अभ्यास

1. नीचे दिए हुए अशुद्ध रूपों को शुद्ध करो
   (अ) पत्नि, नारि, ऐक्यता, कोमलांगिनी, मान्यनीय।
   (आ) सदोपदेश, सन्यासी, स्वयम्बर, पिताभक्ति, माताहीन।
   (इ) पंचम्, जहां, हंसना, आंख, दोनो, पांचवाँ।
   (ई) रमेश को चार भाई है।
   मैंने रोटी को खाया।
   मेरा नाम श्रीमहेश दास है।
   वह दो महीना से बीमार है।

DAILY ASSAM

3. विशेष शब्द और शब्द-समूह का प्रयोग

भाषा में कई प्रकार के शब्द-रूपों का व्यवहार होता है। एक ही शब्द के अनेक रूप होते हैं, तो दूसरी ओर अनेक शब्दों के लिए भी एक शब्द रहा है। इसी प्रकार शब्द-समूह से भी भाषा आकर्षक और शैली प्रभावोत्पादक होती है। विभिन्न प्रकार के शब्दों, शब्द-समूह का परिचय नीचे लिखे अनुसार है। जैसे-

1. श्रुतिसम शब्द 2. एकार्थक शब्द 3. अनेकार्थक शब्द
4. समानार्थक (पर्यायवाची) शब्द 5. विपरीतार्थक (विलोमार्थी) शब्द 6. विशेष शब्द-समूह

उपर्युक्त सभी शब्द-रूपों से भाषा की रचनात्मक-शक्ति बढ़ती है। प्रत्येक शब्द-रूप के उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

1. श्रुतिसम शब्द

श्रुतिसम शब्द के अर्थ है एक जैसा सुनाई देना या बोलते समय उच्चारण में समानता होना। इनका अंतर समझ लेना हमारे लिए जरूरी है। श्रुतिसम शब्दों को ही शब्द-युग्म, समोच्चारित शब्द और श्रुति समभिन्नार्थक शब्द आदि भी कहते हैं। ये समान रूप से सुनाई देते हैं, पर अर्थ की दृष्टि से भिन्न होते हैं।

जब दो या दो से अधिक शब्द सुनने में एक जैसे लगे, किंतु अर्थ में भिन्नता हो, उन्हें श्रुतिसम शब्द कहते हैं।

उदाहरण

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अंस	- कंधा	अवलंब	- सहारा
अंश	- हिस्सा	अविलंब	- तुरंत
अंत	- समाप्त	अभय	- निर्भय

अत्य – अंतिम
अँगना – घर का आँगन
अंगना – स्त्री
अन्न – अनाज
अन्य – दूसरा
अणु – कण
अनु – पीछे
अभिराम – सुंदर
अविराम – लगातार
अपेक्षा – से (तुलना में)
उपेक्षा – तिरस्कार
आदि – आरंभ
आदी – अभ्यस्त
अवधि – समय की सीमा
अवधी – अवध क्षेत्र की भाषा
आरति – पीड़ा
आरती – देवता की पूजा
आवास – निवास
आभास – प्रतीत होना
आर्त्त – दुखी
आर्द्र – गीला
इत्र – सुगंध
इतर – दूसरा
औसर – अवसर
ऊसर – बंजर भूमि
कुल – वंश
कूल – किनारा
कलि – कलियुग
कली – मुँह बंधा फूल
कृपण – कंजूस
कृपाण – कटार
कुंतल – सिर के बाल
कुंडल – कान का आभूषण
कुच – स्तन
कूच – प्रस्थान
द्रव – रस
द्रव्य – पदार्थ
नाई – तरह
उभय – दोनों
अमित – अत्यधिक
अमीत – शत्रु
असित – काला
अशित – खाया हुआ
अध्ययन – पढ़ना
अध्यापन – पढ़ाना
अरि – शत्रु
अरी – एक संबोधनवाचक शब्द
अलि – भौंरा
अली – सखी
कर्कट – केंकड़ा
करकट – कूड़ा
छत्र – छात्रा
छात्र – विद्यार्थी
ग्रह – तारे
गृह – घर
गूड़ – मीठा खाद्य विशेष
गूढ़ – गंभीर
चिर – हमेशा रहने वाला
चीर – पुराना वस्त्र खंड
चिता – शव जलाने का आधार
चीता – बाघ
जड़ – मूल
जड़ा – बुढ़ापा
तरणि – सूर्य
तरणी – नाव
तरुणी – स्त्री
दिन – दिवस
दीन – गरीब
नीर – पानी
नीड़ – घोंसला
नियत – निश्चित
नीयत – इरादा
निश्चल – अटल
निश्छल – कपटरहित
पवन – हवा
पावन – पवित्र करने वाला

DAILY ASSAM

नाईं	- हजाम	पथ	- रास्ता
नारी	- स्त्री	पथ्य	- आहार
नाड़ी	- नब्ज	पुर	- नगर
प्रसाद	- कृपा, भोग	पूर	- बाढ़, भरा
प्रासाद	- महल	बहन	- बहिन
प्रणय	- प्रेम	वहन	- ढोना
परिणय	- विवाह	बात	- वचन
पानी	- जल	वात	- हवा
पाणि	- हाथ		

एकार्थक शब्द (विशेष भावबोधक शब्द)

एक निश्चित अर्थ रखने वाले शब्द को एकार्थक शब्द कहते हैं। ये निश्चित अर्थ वाले शब्द होते हैं, जो अर्थ की दृष्टि से विशेष उपयुक्त होते हैं।

उदाहरण

1. आत्मा — अभौतिक, तत्त्व, जिसका कभी नाश न हो।
2. अज्ञेय — जो जाना न जा सके।
3. अधिवेशन — किसी विषय पर आयोजित अस्थायी सभा।
4. सभापति — सभा का प्रधान।
5. अनुग्रह — छोटे व्यक्ति के लिए किया जाने वाला उपकार।
6. आसक्ति — मोहजनित प्रेम।
7. अनुरोध — दूसरों से की जाने वाली प्रार्थना।
8. अन्वेषण — अज्ञात वस्तु की खोज।
9. पाप — नैतिक नियमों का उल्लंघन।
10. किसान — खेती करने वाले।
11. घमंड — अपने को बड़ा समझने की भावना।
12. पूजा — भक्तिपूर्ण उपासना।
13. अलौकिक — असाधारण।
14. आयु — जीवन की अवधि।
15. आज्ञा — बड़े व्यक्तियों द्वारा दिया गया निर्देश।
16. पूजनीय — पिता-गुरु-सम्मानीय पुरुषों के प्रति सम्मानपूर्वक शब्द।
17. अनाथ — जिसकी देख-रेख करने वाला कोई न हो।
18. आराधना — इष्टदेव के प्रति की गई पूजा या अर्चना।
19. समालोचना — किसी विषय के गुण-दोषों का सम्यक् विवेचन।
20. हर्ष — आनंद।
21. कामना — वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा।
22. द्वेष — शत्रुता।
23. स्पर्धा — दूसरे से आगे बढ़ने की इच्छा।
24. उदाहरण — किसी नियम के विषय में दिया गया दृष्टांत।

25. उद्योग — उद्यम, कुछ काम करने का प्रयत्न।
26. पौरुष — वीरतापूर्ण कार्य करने की क्षमता, पुरुष के गुण।
27. कंगाल — पेट पालने के लिए भीख माँगने वाला।
28. दीन — दरिद्र।
29. करुणा — दुखियों प्रति दया।
30. कर्तव्य — करने लायक कार्य।
31. पीड़ा — दुख, कष्ट।
32. ग्लानि — पश्चात्ताप में पछतावे की भावना।
33. कुशल — निपुण।
34. अभिनेत्री — अभिनय करने वाली स्त्री।
35. पत्नी — किसी की विवाहिता स्त्री।
36. स्त्री — कोई भी साधारण नारी।
37. पर्यटन — चारों ओर घूमना, भ्रमण।
38. भ्रमण — घूमना-फिरना।
39. पुत्र — अपना बेटा।
40. बालक — कोई भी लड़का।
41. प्रेम — अनुराग की भावना।
42. स्नेह — छोटे के प्रति अनुराग की भावना।
43. भ्रम — भूल।
44. संदेह — अनिश्चित समय तक की उलझन।
45. मित्र — सखा, दोस्त।
46. बंधु — स्वजन, भाई।

अनेकार्थक शब्द

भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं, जिनके अनेक अर्थ होते हैं। जैसे —

मैं आम खाता हूँ। (आम - फल)

आम जनता को मालूम है कि रिश्वत से काम बनता है।

(आम - सर्वसाधाराण)

अन्य उदाहरण

अंक — संख्या, गोद, नाटक के अंक, गिनती के अंक।
अर्थ — धन, कारण, मतलब, लिए।
अक्षर — ब्रह्म, वर्ण, अमर।
अंबर — आकाश, गगन, कपड़ा।
अमृत — जल, दूध, जिससे मृत्यु न हो।
अग्र — आगे, सिर, मुख्य, श्रेष्ठ।
अरुण — लाला, सूर्य, सिंदूर।
अतर — फर्क, फासला, आत्मा, अवधि।
उत्तर — उत्तर दिशा, हल, बाद का।
कटाक्ष — तिरछी नजर, व्यंग्य, आक्षेप।

कर — हाथ, टैक्स, किरण, कर, प्रत्यय।
कोट — ऊँची दीवार, पहनने का कोट।
खर — गधा, दुष्ट, एक राक्षस, तिनका, तेज।
खग — पक्षी, तारा, वायु।
खल — दुष्ट, नीच।
गति — चाल, दशा, मोक्ष, प्रवाह।
घन — मेघ, घना।
जीवन — जिंदगी, प्राण, जीविका।
जलज — कमल, चंद्रमा, मछली, जल के प्राणी।
ताल — हाथ की हथेली, संगीत का ताल, तालाब।
ठाकुर — पूज्य देवता, क्षत्रिय जाति, रसोइया।
द्विज — ब्राह्मण, पक्षी, चंद्रमा।
तारा — नक्षत्र, भाग्य, आँख की पुतली, बाली की स्त्री।
दंड — डंडा, सजा।
पक्ष — तरफ, पीछे, 14 दिन की अवधि।
पद — पैर, डग, स्थान, ओहदा, पद्य का चरण।
पानी — जल, इज्जत, चमक।
मधु — शहद, शराब, वसंत ऋतु।
फल — पेड़ का फल, नतीजा, संतान, बदला, तीर का अग्रभाग।
भूत — अतीत काल, प्राणी, प्रेत जगत।
रस — स्वाद , सार, आनंद, द्रव, उमंग।
वर्ण — रंग, जाति, शब्द।
सर — तालाब, सिर, महाशय (अंग्रेजी)।
हंस - एक जलपक्षी , प्राण, ब्रह्म, कामदेव।

समानार्थक शब्द

समानार्थक शब्द ही पर्यायवाची शब्द है। एक शब्द के स्थान पर जब उसी अर्थवाला दूसरा शब्द आए तो ऐसे शब्दों को समानार्थक या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। जैसे-

अध्यापक पढ़ा रहे हैं।
शिक्षक पढ़ा रहे हैं।

अध्यापक और शिक्षक समान अर्थवाले शब्द हैं। एक के स्थान पर दूसरा आ सकता है, इसलिए 'अध्यापक ' शब्द का 'शिक्षक' पर्यायवाची शब्द हुआ।

अन्य उदाहरण

अरण्य - जंगल, विपिन, वन, कानन, अटवी।
असुर - दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशाचर, शुक्रशिष्य, दितिसुत।
आँख - नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृष्टि।
आकाश - व्योम, गगन, अंबर, नभ, आसमान, अनंत, अंतरिक्ष, शून्य।
आनंद - मोद, प्रमोद, मुद, हर्ष, आमोद, सुख, प्रसन्नता, उल्लास, आह्लाद।
इच्छा - आकांक्षा, अभिलाषा, चाह, कामना, मनोरथ, वांछा, कांक्षा, लिप्सा, मन।

कपड़ा – वस्त्र, पट, वसन, अंबर, चीर।
कमल – सरोज, नीरज, जलज, इंदीवर, पंकज, सरसिज, पद्म, नलिन, कंज, राजीव, शतदल, अंबुज।
गदहा – खर, गधा, गर्दभ।
घर – निकेतन, गृह, भवन, सदन, आलय, मंदिर, आवास, वास, कुटी, शाला, आयतन, गेह, धाम।
चंद्र – चाँद, चंद्रमा, सुधाकर, शशि, राकापति, इंदु, राकेश।
जल – पानी, नीर, अंबु, वारि, अमृत, जीवन, धन, रस, तोय।
दुख – पीड़ा, यंत्रणा, कष्ट, क्षोभ, संकट, शोक, पीर, वेदना।
धन – द्रव्य, संपत्ति, संपदा, वित्त, दौलत, अर्थ, विभूति।
पंडित – विद्वान, कोविद, कवि, मनीषी, प्राज्ञ।
पक्षी – चिड़िया, खग, पखेरू, विहंग, अंडज, द्विज।
पति – भर्तार, स्वामी, वल्लभ, साजन, प्रियतम।
पत्नी – अर्द्धांगिनी, भार्या, सहधर्मिणी, गृहिणी, तिय, बहू, दारा, प्राणप्रिया, जीवन-संगिनी, जोरू, कांता, लुगाई, स्त्री, औरत।
पुत्र – बेटा, सुत, आत्मज, नंदन, लड़का, तनय, छोकरा।
पुत्री – बेटी, सुता, आत्मजा, नंदिनी, लड़की, तनया, छोकरी, दुहिता।
पुष्प – फूल, सुमन, प्रसून, कुसुम, पुहुप।
पृथ्वी – भूमि, भू, धरा, धरती, वसुधा, वसुंधरा, अवनि, मेदिनी, अदला, मही, विश्वंभरा, माता।
बिजली – विद्युत, दामिनी, बिजुरी, चपला, चंचला।
मेघ – बादल, पयोधर, घन, वारिद, नीरद, अंबुद।
राजा – नृप, भूप, नरपति, नरेश, राव, सम्राट, भूपेश।
रात्रि – निशा, रैन, रजनी, रात, यामिनी, विभावरी।
वृक्ष – पेड़, तरु, विटप, द्रुम, गाछ, पादप।
समूह – समुदाय, वृंद, गण, संघ, राशि, समुच्चय, दल, झुंड, टोली, मंडली, जत्था।
सुंदर – रम्य, सुहावना, मनोहर, मंजुल, रमणीक, मनभावन, अभिराम, ललित, कमनीय, चारु, खूबसूरत, उत्तम।
हवा – वायु, वात, बयार, समीर, अनिल, पवन, श्वसन।
पत्थर – प्रस्तर, पाषाण, पाहन, शिला।
पर्वत – पहाड़, गिरि, भूमिधर, शैल, अचल।
देवता – सुर, देव, अमर, आदित्य।
चतुर – योग्य, विज्ञ, होशियार, निपुण, प्रवीण, पटु, सयाना, कुशल, दक्ष।
दास – नौकर, चाकर, सेवक, परिचारक, भृत्य।

विपरीतार्थक शब्द

एक-दूसरे के प्रतिकूल (उलटा) अर्थ वाले शब्द परस्पर विपरीतार्थक शब्द कहलाते हैं। उदाहरण –

शब्द	विपरीतार्थक शब्द	शब्द	विपरीतार्थक शब्द
अंत	आदि	अच्छा	बुरा
अंतरंग	बहिरंग	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अंतर्मुखी	बहिर्मुखी	अधुनातन	पुरातन
अंधकार	प्रकाश	आय	व्यय
अगला	पिछला	आयात	निर्यात

अनाथ	सनाथ	आरंभ	अंत
अनुकूल	प्रतिकूल	आवश्यक	अनावश्यक
अपना	पराया	आशा	निराशा
अपमान	सम्मान	आस्तिक	नास्तिक
अपेक्षा	उपेक्षा	इच्छा	अनिच्छा
अमावस्या	पूर्णिमा	उच्च	निम्न
अमृत	विष	उत्कर्ष	अपकर्ष
अल्पज्ञ	बहुज्ञ	उत्तम	अधम
अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक	उत्थान	पतन
अल्पायु	दीर्घायु	उदार	अनुदार
अवनति	उन्नति	उधार	नगद
अस्त	उदय	उपयोगी	अनुपयोगी
आकर्षण	विकर्षण	उपसर्ग	प्रत्यय
आगम	निगम	उपस्थित	अनुपस्थित
आगामी	विगत	कनिष्ठ	ज्येष्ठ
आचार	अनाचार	कपूत	सपूत
आदान	प्रदान	कृत्रिम	अकृत्रिम
आधार	निराधार	क्रय	विक्रय
भीतर	बाहर	नैतिक	अनैतिक
आमिष	निरामिष	न्याय	अन्याय
क्षणिक	शाश्वत	पाश्चात्य	प्राच्य
क्षमा	दंड	प्रत्यक्ष	परोक्ष
खंडन	मंडन	प्रारंभिक	अंतिम
खीझना	रीझना	भौतिक	आध्यात्मिक
गरीब	अमीर	महात्मा	दुरात्मा
गुरु	लघु	मनुज	दनुज
ग्रामीण	नागरिक, शहरी	यथार्थ	कल्पित
घटाना	बढ़ाना	योग	वियोग
चढ़ाना	उतारना	योगी	भोगी
चेतन	अचेतन	रक्षक	भक्षक
क्षत	अक्षत	विधवा	सधवा
जड़	चेतन	विमुख	सम्मुख
जन्म	मृत्यु	व्यावहारिक	सैद्धांत्मिक
जवानी	बुढ़ापा	शांति	अशांति
तारीफ	शिकायत	श्रव्य	दृश्य
दुराचारी	सदाचारी	सगुण	निर्गुण
नकली	असली	सज्जन	दुर्जन
निगलता	उगलता	सहयोगी	प्रतियोगी
निरक्षर	साक्षर	हिंसा	अहिंसा

DAILY ASSAM

विशेष शब्द-समूह

वाक्य में विशेष शब्द-समूह के प्रयोग से भाषा प्रभावशाली और समृद्ध बनती है। ये शब्द-समूह भाषा-रचना की दृष्टि से विशेष महत्व है। जैसे-

सोमेश्वर आजकल मारा-मारा फिर रहा है।

मैं घर-घर घूमता रहा।

अब मैं एक-एक को देख लूँगा।

ऊपर के वाक्यों में मारा-मारा, घर-घर, एक-एक विशेष शब्द-समूह हैं।

अन्य उदाहरण

1. अच्छा से अच्छा (विशेषण)
   अच्छा से अच्छा खाना भी उनको पसंद नहीं आता।

अन्य उदाहरण

बुरा से बुरा
कम से कम
अधिक से अधिक
बढ़िया से बढ़िया
कमजोर से कमजोर

2. गुवाहाटी से आगरा (क्रिया-विशेषण)
   मैं गुवाहाटी से आगरा तक गया हूँ।

अन्य उदाहरण

यहाँ से वहाँ
इधर से उधर
उत्तर से दक्षिण
अफसर से चपरासी
कहाँ से कहाँ

3. पढ़-पढ़ कर (क्रिया-विशेषण)
   वह पढ़-पढ़ कर कमजोर हो गया।

अन्य उदाहरण

रो-रो कर, दौड़-दौड़ कर, खा-खा कर, पी-पी कर, चल-चल कर, मार-मार कर आदि।

4. जाते हुए (क्रिया-विशेषण)
   मैने राम को जाते हुए देखा।

अन्य उदाहरण

सोते हुए, रोते हुए, पढ़ते हुए।

5. पढ़ने वाला (क्रियार्थक-विशेषण)
   मुझे हिंदी पढ़ने वाला कोई नहीं है।

अन्य उदाहरण

सुलाने वाला, सोने वाला, लेने वाला, हँसाने वाला।

6. धोती वाला (संज्ञा-विशेषण)
   वह धोती वाला आदमी कहाँ गया है?

अन्य उदाहरण

जूते वाला, चश्मे वाला, लंबे वाला, सुंदर आँखों वाली।

7. द्वार-द्वार (हिंदी शब्द)
   मै द्वार-द्वार भटकता रहा।

अन्य उदाहरण

शहर-शहर, जंगल-जंगल, गली-गली, पठार-पठार

8. कभी न कभी (अनिश्चयवाचक)
   आप मेरे गाँव में कभी न कभी तो आएँगे।

अन्य उदाहरण

कहीं न कहीं, कोई न कोई, किसी न किसी, कुछ न कुछ।

9. ऐसा न हो कि -
   ऐसा न हो कि राम असफल हो जाए।

10. हद होना (बहुत ज्यादा होना)
    झूठ की भी हद होती है।

अभ्यास

1. भाषा की रचना के लिए कौन-कौन से तत्त्व जरूरी हैं?
2. वाक्य में शब्द-समूह से हमें क्या मिलता है?

(अ) इन शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द बनाओ :
कल, दिन, आदमी, खाना, सोना, पढ़ना, लड़का

(आ) समानार्थी शब्द बनाओ
अध्यापक, विद्यार्थी, घर, वृक्ष, पुस्तक, मित्र, ग्राम, फूल, आँख, कान, पक्षी

(इ) इन शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द बनाओ :
पढ़ाने वाला आदमी, खूब तैरने वाला,
पड़ने वाले लड़के, पूजा करने वाला,
सभा का मुखिया, गाँव का मुखिया,
स्कूल का मुखिया।

(ई) इनको अपने वाक्यों में प्रयोग करो :
झट-पट, जंगल-जंगल, धीरे-धीरे, खा-खा कर, रात भर, कम से कम

(उ) वाक्य गठन के अनुसार वाक्यों को पूरा करो :
न तो..... नहीं .....। जैसे ..... वैसे .....।
जहाँ ..... वहाँ ..... । उधर ..... जिधर।

हिंदी की कुछ लोकोक्तियाँ और मुहावरे

लोकोक्तियाँ

	लोकोक्ति	अर्थ
1.	अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।	(अकेला आदमी बड़ा काम नहीं कर सकता)
2.	अधजल गगरी छलकत जाए।	(कम ज्ञान वाला खुद की प्रशंसा करता है)
3.	अंधा क्या चाहे दो आँखें।	(जिस वस्तु की जरूरत हो यदि वह मिल जाए तो बस सब कुछ मिल गया)
4.	अंधा पीसे कुत्ता खाए।	(कमाने वाला कोई और खाने वाला दूसरा)
5.	अंधों में काना राजा।	(मूर्खों के बीच थोड़ी बुद्धि वाले को इज्जत मिलती है)
6.	अपनी गली में कुत्ता शेर।	(अपने मकान में डरपोक भी बहादुर होता है)
7.	अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गयी खेत।	(काम बिगड़ने के बाद पछताने से कोई लाभ नहीं)
8.	अक्ल बड़ी या भैंस।	(बल से बुद्धि बड़ी होती है)
9.	आगे कुआँ और पीछे खाई।	(दोनों ओर दुविधा)
10.	आप भले तो जग भला।	(अच्छे आदमी के साथ अच्छा बर्ताव ही होता है)
11.	आम का आम गुठलियों का दाम।	(दोनों तरह से लाभ)
12.	उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।	(अपराधी निरपराध को डाँटता है)
13.	ऊँची दुकान फीका पकवान।	(नाम बड़ा परंतु काम छोटा)
14.	ऊँट के मुँह में जीरा।	(पेट के अनुसार भोजन न मिलना)
15.	उधो का लेना न माधो का देना।	(सब झगड़ों से अलग)
16.	एक अनार सौ बीमार।	(वस्तु कम, माँग ज्यादा)
17.	एक पंथ दो काज।	(एक ही उपाय से दो काम करना)
18.	एक हाथ से ताली नहीं बजती।	(दोनों ओर से क्रिया होती है, तभी कोई घटना होती है)
19.	ओछे की प्रीत बालू की भीत	(बुरे आदमी से दोस्ती करना खतरनाक है)
20.	बंदूक से छूटी हुई गोली और मुँह से निकली बात वापस नहीं आती।	(वाक्-संयम आवश्यक है)
21.	खग जाने खग ही की भाषा।	(जो जिसके साथ रहता है वही उसके विचारों से परिचित है)
22.	खोदा पहाड़ निकली चुहिया।	(परिश्रम बहुत, फल थोड़ा)
23.	घर की मुर्गी दाल बराबर।	(घर की चीज की इज्जत न करना)
24.	चट मंगनी पट ब्याह।	(काम जल्दी हो जाना)
25.	चलती का नाम गाड़ी है।	(जब तक हाथ-पाँव चलते-फिरते हैं आदमी के काम भी होते हैं)
26.	चाम प्यारा नहीं काम प्यारा है।	(सूरत की इज्जत नहीं, काम की होती है)
27.	चिकना मुँह सब चाटते हैं।	(बड़े लोगों की खुशामद सब करते हैं)
28.	चोर-चोर मौसेरे भाई।	(एक ही काम करने वाले)
29.	जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय।	(ईश्वर ही सबसे बड़ा रक्षक है)
30.	जो बोओगे सो काटोगे।	(जैसा करोगे वैसा पाओगे।)

मुहावरे

मुहावरा		अर्थ

1. अंगूठा दिखाना = इनकार करना।
   इस दयनीय अवस्था में आज बड़े भाई ने अंगूठा दिखा दिया।
2. अंतड़ियों में बल पड़ना = पेट दुखने लगना।
   आपकी विनोदपूर्ण बातें सुन कर तो हमारी अंतड़ियों में बल पड़ने लगा है।
3. अंधे की लकड़ी = एकमात्र सहारा।
   यह मेरी छोटी -सी दुकान ही मेरे लिए अंधे की लकड़ी है।
4. अक्ल का दुश्मन = मूर्ख।
   हरिमोहन तो अक्ल का दुश्मन है।
5. अगर-मगर करना = व्यर्थ की बातें करना।
   देखो मित्र, मेरे पैसे दे दो, अगर-मगर मत करो।
6. अपना उल्लू सीधा करना = अपना काम निकालना।
   तुम मीठी बातें करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हो?
7. अपने पैरों पर खड़ा होना = स्वावलंबी होना।
   पहले मैं अपने पैरों पर खड़ा हो जाऊँ तब शादी करूँगा।
8. आग बबूला होना = गुस्से से लाल होना।
   अरे भाई! तुम तो जरा सी बात में ही आग बबूला हो गए।
9. आग में घी डालना = झगड़ा बढ़ाना।
   मोहन बात यही समाप्त करो और क्यों आग में घी डाल रहे हो।
10. आपे से बाहर होना = बहुत गुस्से में आना।
    मैंने लीलाधर को चोरी करने से मना किया तो वह आपे से बाहर गया।
11. ईंट का जवाब पत्थर से देना = दुष्ट के साथ दुगुनी दुष्टता करना।
    बदमाश को तो ईंट का जवाब पत्थर से ही देना चाहिए।
12. ईद का चाँद होना = बहुत दिनों के बाद दिखाई देना।
    आजकल सतीश तो ईद चाँद हो रहा है।
13. उन्नीस बीस होना = अधिक अंतर नहीं, लगभग, बराबर।
    मीना और लीना आपस में उन्नीस-बीस हैं।
14. उल्लू बनाना = मूर्ख बनाना।
    आपने मोहन को आज अच्छा उल्लू बनाया।
15. कागजी घोड़ा दौड़ाना = केवल लिखा पढ़ी करना।
    सुनो मित्र-कागजी घोड़ा दौड़ाने से काम नहीं चलेगा, तुम्हें खुद साहब के पास जाना चाहिए।
16. काम तमाम करना = मार डालना।
    पुलिस ने दो का काम तमाम कर दिया।
17. किताबी कीड़ा = सदा पुस्तक पढ़ने वाला।
    उमेश तो आजकल किताबी कीड़ा बन गया है।

18. खाक छानना = मारा-मारा फिरना।
आजकल बी.ए. पास होने पर भी खाक छाननी पड़ती है।

19. खून का प्यासा = जान का दुश्मन।
आजकल भाई-भाई ही आपस में खून के प्यासे हो जाते हैं।

20. घाट-घाट का पानी पीना = जगह-जगह रहना।
गणेश को आप क्या सिखाएँगे, वह तो घाट-घाट का पानी पी चुका है।

21. घाव पर नमक छिड़कना = दुखी को और दुखी करना।
मैं तो परीक्षा में फेल हो चुका हूँ और तुम घाव पर नमक क्यों छिड़क रहे हो?

22. घुटने टेक देना = हार मानना।
पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना के सामने घुटने टेक दिए।

23. चंपत हो जाना = भाग जाना।
चोर चोरी करके चंपत हो गया।

24. चुल्लू भर पानी में डूब मरना = अधिक लज्जित होना।
तुमने चोरी करके खानदान का नाम बदनाम कर दिया।
अब चुल्लू भर पानी में डूब मरो।

25. छक्के छुड़ाना = परेशान कर देना।
असम की फुटबॉल टीम ने पंजाब की फुटबॉल टीम के छक्के छुड़ा दिए।

26. छान मारना = अच्छी तरह खोजना।
मैंने सब जगह छान मारा, किंतु कहीं नौकरी नही मिली।

27. जान पर खेलना = प्राण संकट में डालना।
परेश ने अपनी जान पर खेल कर बच्चे को ब्रह्मपुत्र में से निकाल लिया।

28. टपक पड़ना = अकस्मात् आ जाना।
हरीश, तुम यहाँ कहाँ से टपक पड़े।

29. टुकड़े तोड़ना = दूसरे की कमाई पर पलना।
भाई, अब टुकड़े तोड़ने से लाभ नहीं, कुछ काम करो।

30. टूट पड़ना = एकाएक हमला करना।
लाचित सेना मुगल सेना पर एकाएक टूट पड़ी।

31. ठोकर खाना = मुसीबत उठाना।
ठोकर खाने से ही ज्ञान मिलता है।

32. तन-मन से = पूरे ध्यान से।
तन-मन से पढ़ोगे तो पास हो जाओगे।

33. दंग रह जाना = चकित रह जाना।
उसका खेल देख कर मैं तो दंग रह गया।

34. दिन फिरना = सुख के दिन आना।
लॉटरी के रुपये मिलने से अब तो मेरी दिन फिर गए।

35. धोती ढीली होना = डर जाना।
पिताजी की डाँट से मेरी धोती ढीली हो गई।

अभ्यास

1. नीचे लिखी लोकोक्तियों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

   अंधों में काना राजा । अक्ल बड़ी या भैंस । आप भले तो जग भला । एक पंथ दो काज। चोर-चोर मौसेरे भाई। अपनी गली में कुत्ता शेर।

2. नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

   खाक छानना। चंपत हो जाना। टूट पड़ना। तन-मन से। दिन फिरना। ठोकर खाना।

अनुवाद कला और उनके प्रकार

1. अनुवाद क्या है ?

   अनुवाद का अर्थ है रूपांतरण या भाषांतरण। अर्थात् एक भाषा के विचारों को दूसरों भाषा में बदल देना ही अनुवाद है।

   परिभाषा-''किसी एक भाषा के भाव का दूसरी भाषा में प्रकट करने का नाम ही अनुवाद है।''

2. अनुवाद के प्रकार :

   अनुवाद मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं -

   (अ) **शब्दानुवाद** - इसमें शब्दों के बदले शब्द और वाक्यों के बदले भावों को प्रकट रखना चाहिए।

   (आ) **भावानुवाद** - इसमें भाव की प्रधानता रहती है। लेखक के भावों को प्रकट करने के लिए भाषा के शब्दों या वाक्यों को घटाया-बढ़ाया या बदला जा सकता है, परंतु भाव की रक्षा की जाती है।

   (इ) **स्वतंत्र अनुवाद** - इसे छायानुवाद भी कहते हैं। इसमें मूल भाव का अध्ययन करके स्वेच्छानुसार तोड़-मरोड़ कर अनुवाद किया जाता है। इसलिए इस प्रकार के अनुवाद में बहुत परिवर्तन होने से वह रचना मौलिक-सी हो जाती है।

   इन तीनों अनुवादों में दूसरे अनुवाद का ढंग अच्छा है, क्योंकि हम भावों या विचारों को जानने के लिए ही अनुवाद करते हैं। और इसकी प्राप्ति हमें अनुवाद के दूसरे प्रकार से ही होती है।

3. अनुवाद के लिए आवश्यक जानकारियाँ :

   जब हम किसी भाषा की रचना को अपनी भाषा में रूपांतरित करें तो निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए -

   (अ) सर्वप्रथम अनुवाद की जाने वाली रचना ध्यान से पढ़ कर कठिन शब्दों का रेखांकित कर लेना चाहिए।

   (आ) अनुवाद की भाषा व्याकरण सम्मत और प्रकृति के अनुरूप होनी चाहिए।

   (इ) भाव को स्पष्ट करने के लिए अनुवाद के प्रचलित भाषा रूपों को ही महत्व देना चाहिए।

   (ई) अनुवाद की भाषा में भी शब्द-क्रम, वाक्य-क्रम या ध्वनि-क्रम अपनाना चाहिए।

   (उ) मूल रचना के जटिल वाक्यों को सरल वाक्य में बदल देना चाहिए।

   (ऊ) भाव की स्पष्टता के लिए अनुवाद की भाषा में कुछ शब्द या वाक्य जोड़ देना चाहिए या आवश्यकता पड़े तो मूल रचना के शब्दों को छोड़ देना चाहिए।

अभ्यास

(क) हिंदी से मातृभाषा में अनुवाद करो :

(1) कामाख्या देवी का मंदिर गुवाहाटी के नीलाचल पहाड़ पर अवस्थित है। इसके बिलकुल किनारे ही महाबाहु बहता है। पहाड़ की एक चोटी पर शिवजी का मंदिर है। यह पहाड़ जमीन से करीब डेढ़ मील ऊँचा है। कामाख्या पहाड़ के ऊपर से देखने पर गुवाहाटी नगर बहुत सुंदर दिखाई पड़ता है।

(2) असमीया के 'बिहु' उत्सव की विशेषता है कि यह बिलकुल असांप्रदायिक है। इसे असम में बसी हुई सभी जाति, धर्म-समाज, संप्रदाय के लोग एक साथ मना सकते हैं। 'बिहु' असमीया जाति की एकता का प्रतीक है।

(ख) अनुवाद से तुम क्या समझते हो?

(ग) अनुवाद कितने प्रकार के होते हैं?

(घ) अनुवाद करते समय किन-किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए?

सारांश-लेखन

1. **सारांश लेखन का अर्थ :**

लेखक अपने भावों या विचारों को कई प्रकार की शैलियों में व्यक्त करता है। लेखक के विचारों को संक्षेप में लिखना ही सारांश-लेखन है।

2. **सारांश-लेखन के लिए आवश्यक बातें :**

(अ) सारांश, मूल रूप का तृतीयांश होना चाहिए, इसमें अलग से कोई नई बात जोड़नी नहीं चाहिए।

(आ) सारांश में स्पष्टता होनी चाहिए, जिससे सारांश को पढ़ते समय भाव को सरल रूप ग्रहण किया जा सके।

(इ) मूल भाव को संक्षिप्त रूप में क्रमिक ढंग से रख कर सारांश लिखना चाहिए।

(ई) सारांश लिखते समय सरल और उपयुक्त भाषा का प्रयोग करना चाहिए। क्लिष्ट, सामासिक और आंलकारिक शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(उ) सारांश की भाषा प्रांजल, एकार्थक, स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण होनी चाहिए।

(ऊ) सारांश लिखते समय मूल अंश को बार-बार पढ़ना चाहिए और मूल भाव या स्थल को रेखांकित करना चाहिए। तत्पश्चात मूल अंश के सारांश को सरल भाषा में लिखना चाहिए।

(ए) सारांश का शीर्षक भी लिखना चाहिए।

3. सारांश-लेखन के कुछ उदाहरण

(अ) मूल अंश :

ज्ञान-राशि के संचित कोश का नाम साहित्य है। सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखने वाली और निर्दोष होने पर भी, यदि कोई भाषा अपने निज का कोई साहित्य नहीं रखती तो वह रूपवती भिखारिन की तरह कदापि आदरणीय नहीं हो सकती। उसकी शोभा, उसकी श्री-संपन्नता, उसकी मान-मर्यादा, उसके साहित्य पर ही अवलंबित रहती है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक आसक्ति या निर्जीवता और सामाजिक सभ्यता तथा असभ्यता का निर्णायक एक मात्र साहित्य ही है। जिस जाति-विशेष में साहित्य का अभाव रहा या उसकी न्यूनता आपको दिखाई पड़े तो आप निस्संदेह निश्चित समझिए कि यह जाति असभ्य किंबा अपूर्ण सभ्य है। जिस जाति की सामाजिक अवस्था जैसे होती है, उसका साहित्य भी वैसा ही होता है। जातियों की क्षमता और सजीवता यदि कहीं प्रत्यक्ष देखने को मिल सकती है तो उसके साहित्य रूपी आईने में ही मिल सकती है।

मूल अंश का सारांश :

साहित्य का महत्व

किसी जाति या राष्ट्र का ज्ञान उसके साहित्य में संचित रहता है। प्रत्येक भाषा का साहित्य होना चाहिए। साहित्य से किसी देश या जाति को ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्थिति का पता चलता है। इससे उसकी सभ्यता, संस्कृति और मनोभाव का परिचय भी मिलता है। वस्तुत: साहित्य समाज या जाति का दर्पण है।

(आ) मूल अंश :

विद्यार्थी आत्मा पर संस्कार डालने में गांधीजी को बड़ा परिश्रम करना पड़ा। उन्होंने उसकी आत्मिक शिक्षा के लिए धार्मिक पुस्तकों का बहुत कम आश्रय लिया था। धार्मिक मूल तत्वों को समझ लेना तथा धर्म-ग्रंथों का साधारण ज्ञान होना विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त है। परंतु आत्मा की शिक्षा कुछ और ही है। आत्मा का विकास करना, चरित्र-निर्माण करना, ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना, आत्मज्ञान संपादन करना हैं। गांधीजी के सामने प्रश्न यह था कि आत्मिक शिक्षा कैसे दी जाए। इसके लिए उन्होंने विद्यार्थियों से भजन गवाना शुरू किया। नीति की पुस्तकें पढ़ कर सुनाईं, परंतु फिर भी उनका मन संतुष्ट नहीं हुआ। जैसे-जैसे वे विद्यार्थियों से परिचित हुए, वैसे-वैसे उन्हें मालूम हुआ कि यह पुस्तकों द्वारा नहीं हो सकता। जैसे शारीरिक शिक्षा कसरत द्वारा और बौद्धिक शिक्षा बुद्धि द्वारा ही दी जा सकती है, वैसे ही आत्मिक शिक्षक का आचरण है। सावधान शिक्षक अपने आचरणों से शिष्यों की आत्मा को हिला सकता है।

मूल अंश का सारांश :

आत्मिक शिक्षा

गांधीजी ने विद्यार्थियों को आत्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिए अनेक प्रयोग किए। उनके अनुसार अपनी आत्मा का विकास करना और अपने चरित्र का निर्माण करना ही आत्मिक शिक्षा है। भजन गाने, पूजा करने या नीति की पुस्तक पढ़ने-पढ़ाने से अधिक लाभ नहीं होता। केवल शिक्षक अपने शुद्ध आचरण से ही विद्यार्थियों की आत्मिक शिक्षा प्रदान कर सकता है।

(इ) मूल अंश :

भारत में अनेक प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं। उत्तर भारत के दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन, दक्षिण भारत का ओणम, महाराष्ट्र का पलो, पंजाब का लोहड़ी आदि त्योहार दुनिया में प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार बिहु त्योहार भी खुशियों का त्योहार है। त्योहार हमें आनंद और एकता का संदेश देते हैं। प्रत्येक भारतीय के हृदय में त्योहारों के प्रति आत्मीयता और श्रद्धा है। प्रत्येक त्योहार के साथ एक न

एक शिक्षा जुड़ी रहती है। अत: त्योहार पवित्रता और जागृति के प्रतीक भी है। त्योहारों में हमारी भारतीय संस्कृति छिपी रहती है। अत: हमें भारतीय त्योहारों के प्रति पवित्र भावना रखनी चाहिए। चाहे बंगाल, पंजाब या महाराष्ट्र का त्योहार हो या चाहे मद्रास का त्योहार हो, सभी त्योहार हमारे हैं, क्योंकि ये सभी भारतीय त्योहार हैं। ईद और क्रिसमस भी हमारे त्योहार हैं। ये सब भारत की निधि हैं।

मूल अंश का सारांश :

त्योहारों का देश भारत

भारत में वर्ष भर कोई-न-कोई त्योहार मनाया जाता रहता है। भारतीय लोगों में त्योहार के प्रति आस्था है, क्योंकि त्योहार से हमें पवित्रता और एकता की शिक्षा मिलती है और ये हमारी संस्कृति के रक्षक हैं। अत: हमारा कर्तव्य है कि प्रत्येक त्योहार के प्रति सद्भावना रखें और 'त्योहार का देश भारत' को विश्व में महान बनाए।

अभ्यास

सारांश-लेखन से तुम क्या समझते हो?

2. सारांश-लेखन में किन-किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए?

3. सारांश-लेखन से क्या लाभ है?

4. निम्नलिखित अंश का सारांश लिखो-

''प्रत्येक मनुष्य के जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। यदि तुम्हारा कोई उद्देश्य नहीं तो तुम जीवन में सफल न होगे। 'क्या करोगे' इसको तुम्हें जानना आवश्यक है। उद्देश्यहीन मनुष्य बिना पतवार की नाव की तरह है। विभिन्न मनुष्यों के विभिन्न उद्देश्य होते हैं। कुछ लोग धन कमाना चाहते हैं। विद्यार्थियों का उद्देस्य 'देश सेवा' होना चाहिए। भारत एक निर्धन देश है। वहाँ के किसान, बच्चे सरल और पवित्र हैं। वे भूमि में श्रम करके भी अच्छी मजदूरी नहीं निकाल पाते। विद्यार्थीगण उन्हें योग्य और सफल किसान बनाने का उद्योग कर सकते हैं।''

पत्र-लेखन

पत्र-लेखन का महत्व :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रह कर वह प्रतिदिन समाज के कार्यकलापों में भाग लेता है। समाज के लोगों से विचारों का आदान-प्रदान करता है। विचारों का आदान-प्रदान वह तीन रूपों में करता है।

1. प्रत्यक्ष बोल कर।
2. विभिन्न प्रकार के संकेतों द्वारा।
3. लिख कर।

आधुनिक युग मशीनों और कागज का युग है। हमारा संबंध भी अब सारे पृथ्वी के लोगों से हो गया है, क्योंकि विज्ञान ने इस संसार को एक छोटा-सा परिवार जैसा बना दिया। अत: हम कम समय में दूर के लोगों से विचारों का आदान-प्रदान केवल कागज पर लिख कर ही कर सकते हैं। पत्र-लेखन को ही पत्रचार या पत्र-व्यवहार कहते हैं।

(अ) पत्रों के प्रकार

पत्र प्रमुख रूप से दो प्रकार के होते हैं -

1. निजी पत्र (गैर सरकारी)
2. व्यावसायिक पत्र (सरकारी)

निजी पत्र के अंतर्गत कई प्रकार के पत्र आते हैं। जैसे-

1. वैयक्तिक पत्र 2. पारिवारिक पत्र 3. सामाजिक पत्र 4. बधाई पत्र 5. निमंत्रण पत्र 6. परिचय पत्र 7. प्रशंसा पत्र 8. शोक पत्र 9. आवेदन पत्र।

(आ) निजी पत्रों की विशेषताएँ

1. ये पत्र पिता-भाई आदि पारिवारिक लोगों के साथ एवं गुरु, मित्र और संबंधियों को लिखे जाते हैं।
2. ये पत्र अनौपचारिक और आत्मीयतापूर्ण होते हैं।
3. इन पत्रों में प्राय: व्यक्तिगत जीवन-संबंधी विषय-वस्तु रहती है।
4. इन पत्रों की भाषा और विचार स्वच्छंदता लिए होते हैं।

(इ) निजी पत्रों का इतिहास और नमूने

निजी पत्र प्राचीन समय से ही किसी न किसी रूप में लिखे जाते रहे हैं। समयानुसार पत्र लिखने की प्रणाली में कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहा।

आजकल दो प्रणालियों से पत्र लिखे जाते हैं।

प्राचीन प्रणाली - इस प्रकार की प्रणाली में ईश्वर का नाम, अनेक उपमाएँ तथा आलंकारिक शब्दावलियों का प्रयोग होता है। यह प्रणाली आजकल पुरानी और अप्रचलित मानी जाती है। हिंदी भाषी प्रदेशों के ग्रामीण लोग आज भी इसका प्रयोग करते हैं, परंतु हमें इस प्रणाली के अनुसार पत्र नहीं लिखना चाहिए।

प्राचीन प्रणाली के एक पत्र का नमूना -

पिता को पत्र

श्री गणेशाय नमः

''सिद्ध श्री 7 अनेक उपमा योग्य'' स्नेह-सागर, प्रयाग शुभ स्थान विद्यमान श्री पिताजी की सेवा में आज्ञाकारी विश्वेश्वर का प्रणाम समूह पहुँचे। मैं आपके आशीर्वाद से सकुशल हूँ। आपके कुशल-वृत्त का श्रीनारायण से आकांक्षा रखता हूँ। वृत्त यह है कि मैं आपके भेजे हुए 50 रु. पा गया। आपके आज्ञानुसार घर आते समय चाँदी लेते आऊँगा।

इति शुभम्।

फागुन बदी 7 संवत् 2070

2. **आधुनिक प्रणाली** - इस प्रकार की प्रणाली में प्रारंभ में ईश्वर का नाम या अनेक उपमा संबंधी शब्दों को छोड़ दिया गया है। केवल आवश्यक और महत्वपूर्ण बातों को ही पत्र में स्थान दिया जाता है। भाषा और भाव सरल व क्रमिक होते हैं। हमें इस प्रणाली के अनुसार ही पत्र लिखना चाहिए।

आधुनिक प्रणाली के पत्र का नमूना

आधुनिक प्रणाली के अनुसार पत्र लिखते समय पत्र को सात भागों में विभाजित कर लिखना चाहिए। प्रत्येक भाग का शीर्षक नीचे पत्र के साथ लिखा गया है, किंतु पत्र लिखने समय शीर्षकों को नहीं लिखना चाहिए।

पिता को पत्र

1. पत्र लिखने वाले का पता और दिनांक

(पत्र की दायीं ओर)
शांति कुटीर, शिलपुखुरी
गुवाहाटी - 3
20/7/15

2. पत्र प्राप्त करने वाले को संबोधन और अभिवादन

(पत्र की बायीं ओर)

पूजनीय पिताजी,

सादर चरण स्पर्श।

3. पत्र का आरंभ

मैं ईश्वर की कृपा से प्रसन्न हूँ। आपका पत्र कल ही मिला। छोटी बहन परीक्षा में पास हो गयी है, यह पढ़कर आनंद हुआ।

4. पत्र का मध्य भाग (मुख्य भाग)

मैं पूजा की छुट्टी में घर आऊँगा, लेकिन पहले ही छात्रावास का शुल्क जमा करना है। इसलिए जल्दी ही सौ रुपए भेज दीजिए।

5. पत्र का अंतिम भाग

माताजी, बड़े भाई को चरण स्पर्श और छोटे भाई-बहन को प्यार। गलतियों के लिए क्षमा कीजिएगा। परिवार का शुभ समाचार जल्दी दीजिएगा।

6. पत्र पाने वाले से संबंध (पत्र की दायीं ओर)

आपका आज्ञाकारी पुत्र
उमेश

7. पत्र पाने वाले का पता (डाक टिकट के नीचे की ओर)

(टिकट)
श्री खगेन चंद्र कलिता
गाँव - डिप्लिंग
पो. - भजो
पिन -
जिला - शिवसागर, (असम)

(ई) पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

1. पत्र लिखने वाले का पत्र और पत्र लिखने की तारीख पत्र के दाहिने भाग में ऊपर की ओर लिखना चाहिए।
2. पत्र की बायीं ओर ऊपर पत्र पानेवाले के प्रति संबोधन और अभिवादन जरूर लिखना चाहिए।
3. पत्र की विषय-वस्तु को तीन भागों में लिखना चाहिए। भाषा सरल, सुबोध और विचार क्रमिक और स्पष्ट होना चाहिए।
4. पत्र समाप्त होने के बाद पत्र पाने वाले का पत्र लिखने वाले से क्या संबंध है, इसे संक्षेप में पत्र समाप्त होने के बाद पत्र की दाहिनी तरफ नीचे लिखना चाहिए।

5. पत्र पानेवाले का सही पता (नाम, गाँव का नाम, डाकघर का नाम, पिन, जिला और राज्य का नाम) लिखना चाहिए, यदि पता सही नहीं लिखोगे तो पत्र पाने वाले को पत्र नहीं मिलेगा। पता हमेशा डाक टिकट की बगल में या नीचे लिखना चाहिए।

आदर्श पत्र-लेखन में संबोधन-अभिवादन और संबंध बताने वाले शब्दों का व्यवहार किस तरह से करना चाहिए, यह नीचे बताया गया है।

किसके लिए	संबोधन	अभिवादन	सम्बन्ध
1. बढ़ी आयु या ज्ञानी व्यक्तियों के लिए	श्रीमान आदरणीय पूज्यवाद श्रद्धेय पूजनीय पूजनीया	नमस्कार सादर प्रणाम चरण स्पर्श	आज्ञाकारी सेवक सेवक चरणाभिलाषी दर्शनाभिलाषी
2. बराबरवाले व्यक्ति के लिए	श्रीयुत प्रियवर महोदय महाशय मान्यवर	नमस्ते जय हिंद	भवदीय स्नेही, प्रिय मित्र
3. छोटों के लिए	प्रिय चिरंजीव	प्रसन्न रहो खुश रहो	शुभ चिंतक शुभेच्छु, हितैषी

व्यावसायिक या सरकारी पत्र - किसी कार्य या व्यापार को चलाने के लिए कुछ व्यक्तिगत या सामूहिक संघ, कंपनी, या मंडल या सरकार को पत्र भेजे जाते हैं।

सरकारी, अर्द्ध सरकारी और निजी संस्थाओं में विचारों को या समाचारों को भेजने के लिए मर्यादित और संयमित भाषा द्वारा प्रारूप तैयार किए जाते हैं। इन प्रारूपों को ही व्यावसायिक या सरकारी पत्र कहते हैं।

1. व्यावसायिक संस्थाओं या सरकारी विभागों में व्यवहार होने वाले पत्रों को हम 10 भागों में बाँट सकते हैं।

1. सरकारी पत्र, 2. अर्द्ध सरकारी पत्र, 3. स्मरण पत्र 4. कार्यालय ज्ञापन, 5. परिपत्र, 6. अधिसूचना, 7 . प्रेस विज्ञप्ति 9. तार, 10. कार्यालय आदेश।

सरकारी या व्यावसायिक पत्र का नमूना

(शिक्षा सचिव, असम को पत्र)

पत्र-संख्या अ. 203 कामपुर

24.2.2015

प्रेषक - अजय दास
हिंदी शिक्षक
कामपुर हाईस्कूल, कामपुर
जिला-नगाँव, (असम)

प्रति - शिक्षा सचिव, असम सरकार,
शिक्षा विभाग, असम, गुवाहाटी
द्वारा/निदेशक, लोक शिक्षण (असम), गुवाहाटी
द्वारा/जिला शिक्षा निरीक्षक, नगाँव (असम)।

विषय - हिंदी विद्यालय खोलने के संबंध में।

महोदय,

निवेदन यह है कि मैं, अजय दास, हिंदी शिक्षक, कामपुर, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की 'प्रवीण' परीक्षा उत्तीर्ण कर चुका हूँ और पिछले सात वर्षों से इस विद्यालय में हिंदी का अध्यापन कर रहा हूँ। यहाँ हिंदी सीखने वाले करीब 50 व्यक्ति हैं। अत: कृपया एक हिंदी विद्यालय खोलने की अनुमति दें। साथ ही इसके लिए उचित धन-राशि स्वीकृत कर हिंदी प्रचार को आगे बढ़ाने में मदद करें।

आपका विश्वासपात्र शिक्षक

अजय दास

सरकारी पत्र के प्रमुख भाग

1. **पत्र संख्या**-कार्यालय का कौन-से नंबर का पत्र आप भेज रहे हैं, उसे लिखें।
2. प्रेषक के कार्यालय का नाम।
3. प्रेषक-(पत्र भेजने वाला) का नाम और पद का नाम व पूरा पता।
4. **प्रेषिती** - (पत्र पाने वाला) का नाम, पद व पूरा पता। साथ ही उसके नीचे पदवाले का पद, नाम।
5. **स्थान और तारीख** - (जहाँ से पत्र भेजना हो और जिस तारीख में भेजना हो)।
6. **विषय** - (पत्र लिखने का कारण)
7. **संबोधन** - (महोदय)
8. **पत्र की विषय-वस्तु**
9. **हस्ताक्षर** (पत्र भेजने वाले के)

4. सरकारी पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

1. पत्र संख्या तभी लिखें जब अपने कार्यालय से अनेक पत्र भेज चुके हो।
2. प्रेषक का नाम तभी लिखें जब पत्र भेजनेवाला राजपत्रित अधिकारी हो।
3. प्रेषितों का नाम नहीं लिखना चाहिए। केवल पद का नाम ही लिखना चाहिए।
4. अभिवादन में केवल 'महोदय' ही लिखना चाहिए।
5. पत्र की विषय-वस्तु, मर्यादित, क्रमिक और सरल भाषा तथा प्रभावशाली शब्दों में होना चाहिए।
6. औपचारिक रूप में पत्र के अंत में 'विश्वासपात्र' लिख कर नीचे पत्र भेजने वाले को हस्ताक्षर करना चाहिए।
7. सरकारी पत्र की भाषा पर विशेष ध्यान रखना जरूरी है। इसमें कोई निरर्थक या अपमानजनक शब्द नहीं होना चाहिए।

अभ्यास

1. पत्र किसे कहते हैं?
2. पत्र कितने प्रकार के होते हैं?
3. निजी पत्र के प्रमुख भाग कौन-कौन से होते हैं?
4. सरकारी पत्र के कितने भाग होते हैं?
5. पत्र लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए?
6. किताब खरीदने के लिए 500 रुपये माँगते हुए अपनी माताजी को पत्र लिखो।
7. अध्यापक की नौकरी करने के लिए 'जिला शिक्षा निरीक्षक' को पत्र लिखो।

1. दैनिक व्यावहारिक पत्रों के कुछ नमूने

मित्र को ग्रीष्मावकाश में अपने यहाँ बुलाने के लिए पत्र

बरुवा भवन, लाबान
शिलांग-4
5-6-2015

प्रिय राकेश,

नमस्ते!

मैं यहाँ स्वस्थ एवं सानंद हूँ। खेद है कि रवाना होते समय तुमसे मिल न सका। आशा है, तुम सपरिवार आनंद से होगे।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि कुछ दिन यहाँ आकर मेरे साथ रहो। माताजी भी तुम्हें याद करती है। गर्मी में यहाँ का मौसम ठंडा रहता है। प्राकृतिक सौंदर्य भी बड़ा सुहावना रहता है। तुम विश्वास करो आगरा से तुम्हें यहाँ अच्छा लगेगा। तुमने जो अमरूद्ध का वृक्ष लगाया था, वह भी अब बहुत बड़ा हो गया है। पत्र देना, कब आ रहे हो ताकि मैं स्टेशन पर उपस्थित रहूँ।

माता-पिताजी को चरण स्पर्श और छोटो को प्यार कहना। तुम्हारे पत्र की नहीं, तुम्हारे स्वयं की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

प्रतीक्षा में
तुम्हारा अपना ही
राजेश

पता-

श्रीराकेश वर्मा
मकान नं 45
नया आगरा (उ0 प्र0)

2. प्रधान अध्यापक महोदय को शुल्क माफ करने संबंधी प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

श्रीमान प्रधान अध्यापक महोदय,
कॉलेजिएट हाईस्कूल, गुवाहाटी-1
विषय - शुल्क माफ करने संबंधी प्रार्थना-पत्र

महोदय,

निवेदन है कि मैं एक साधारण परिवार का छात्र हूँ। मेरे पिताजी की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। मैं आगे पढ़ना चाहता हूँ। पिछले वर्ष भी मैं कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ था। मेरे अध्ययन और व्यवहार से मेरे सभी अध्यापक प्रसन्न हैं। अत: मेरी विषम आर्थिक परिस्थिति पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर मुझे विद्यालय के शुल्क माफ करने की कृपा करेंगे।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
उमाराम कलिता
कक्षा-7 (अ)
दिनांक-3-8-2015

3. हिंदी शिक्षक की विदाई पर अभिनंदन-पत्र

शिक्षक प्रवर श्रीजीतेंद्र नारायण दासजी के कर-कमलों में सादर समर्पित

वाणी के वरद पुत्र!

आज का दिन हमारे लिए मुख्य रूप से अहिंदी भाषी स्थान के लिए परम सौभाग्य का दिन है, जब आप जैसे कर्मठ एवं हिंदी के अनन्य सेवक का दर्शन हमें हो रहा है।

कर्तव्यपालक एवं कर्मयोगी!

अपने अपने जीवन में कर्तव्य को ही सब कुछ माना है। आपने हमें यही समझाया है कि कर्तव्य ही जीवन है। आप हिंदी

के एक आदर्श रूप में आज हमारे बीच विराजमान हैं।

हिंदी के कुलभूषण!

राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार के योगी के रूप में आपने ज्ञानोपार्जन एवं ज्ञानदान को ही अपना महान तप माना है। आपके कार्यों से हिंदी धन्य हो गयी है।

सच्चे शिक्षक!

हिंदी प्रचार की दिशा में आपने जो सीख दी है, वह एक नवीन प्रकाश है, जो राष्ट्र की भावनात्मक एकता को बनाए रखने के लिए हमारा पथ-प्रदर्शन करता रहेगा।

हमें विश्वास है कि हम अहिंदी भाषी क्षेत्र के हिंदी प्रेमी छात्र जब भी आपको बुलाएँगे, आप सस्नेह आकर हमारा पथ-प्रशस्त करने की कृपा करेंगे।

भगवान आपको दीर्घायु करें, यही हमारी प्रार्थना है।

नगाँव
5-7-2015

हम हैं आपके गुणमुग्ध
नगाँव हाईस्कूल के छात्र-गण।

4. वी. पी. द्वारा पुस्तकें मँगवाने के लिए पुस्तक-विक्रेता को पत्र :

नवकांत लिगिरा
माजुली हाईस्कूल
17-6-2015

प्रति,

पुस्तक व्यवस्थापक
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
गुवाहाटी-32

महोदय,

मुझे निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है -

1. हिंदी व्याकरण और रचना, कक्षा 9-10
2. गणित, कक्षा 9-10
3. हिंदी असमीया शब्दकोश
4. हिंदी साहित्य, कक्षा 9-10

कृपया उपर्युक्त सभी पुस्तकों की 10-10 प्रतियाँ शीघ्र ही वी.पी.पी. द्वारा भेजने की व्यवस्था करें एवं पुस्तक भेजने की सूचना भी शीघ्र दें।

धन्यवाद।

नवकांत लिगिरा

पता-
पुस्तक व्यवस्थापक
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
गुवाहाटी-32

5. नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र

श्रीमान सचिव महोदय,
हिंदी हाईस्कूल, शिवसागर

महाशय,

निवेदन है कि मुझे दैनिक समाचार-पत्र 'दैनिक-असम' तिथि 15-8-2015 में प्रकाशित विज्ञापन द्वारा ज्ञात हुआ है कि आपके विद्यालय में हिंदी विषय पढ़ाने के लिए एक शिक्षक की आवश्यकता है। अत: मैं भी उस पद के लिए प्रार्थी होना चाहता हूँ।

मैं अपनी शैक्षिक योग्यता एवं अभिज्ञता का पूर्ण विवरण नीचे दे रहा हूँ। प्रमाणित प्रतिलिपियाँ भी साथ संलग्न हैं।

नाम : देवकांत हाजरिका
पता : शांति सदन, डिब्रुगढ़, असम
आयु : 20 वर्ष
योग्यता : विशारद (प्रथम श्रेणी)
मैंट्रिक (प्रथम श्रेणी)

अध्यापन अनुभव : जनवरी 2005 से दिसंबर 2012 तक राष्ट्रभाषा विद्यालय शिलांग में हिंदी शिक्षक के रूप में कार्य किया था।

आशा है, श्रीमान मुझे इस विद्यालय में सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे।

दिनांक 25-8-2015 भवदीय
डिब्रुगढ़ देवकांत हाजरिका

अभ्यास

1. परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाने पर मित्र को एक सांत्वना पत्र लिखो।
2. दो दिन का अवकाश लेने के लिए प्रधान अध्यापक को एक प्रार्थना-पत्र लिखो।
3. प्रधान अध्यापक की विदाई पर एक अभिनंदन-पत्र लिखो।
4. वी.पी.पी. द्वारा कपड़ा मँगाने के लिए कपड़ा विक्रेता को एक पत्र लिखो।
5. छात्रवृत्ति प्राप्त के लिए जिला शिक्षा निरीक्षक को एक प्रार्थना-पत्र लिखो।

निबंध-लेखन

(अ) निबंध क्या है ?

जिस रचना में किसी विषय के संबंध में उचित ढंग से क्रमबद्ध विचार प्रकट किये गये हो, वैसी रचना को निबंध कहते हैं। निबंध के सहारे हम दूसरों के विचारों या भावों को क्रमबद्ध रूप में जान सकते हैं और अपने विचारों की क्रमबद्ध रूप में प्रकट कर सकते हैं। पृथ्वी की सभी वस्तुओं पर निबंध लिखा जा सकता है, किंतु निबंध-रचना के मुख्य आधार हैं-

1. गठित भाषा
2. प्रभावोत्पादक शैली
3. विषयवस्तु में क्रमबद्धता
4. निबंधकार का व्यक्तित्व (स्वयं का प्रभाव)

परिभाषा

''निबंध आधुनिक साहित्य की उस गद्य विद्या को कहते हैं, जिसका क्रमबद्ध और मर्यादित आकार हो, व्यैक्तिकता और भाषा शैली में वैशिष्ट्य हो।''

(आ) निबंध लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें

1. जिस विषय पर निबंध लिखना हो उसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।
2. विषय की जानकारी प्राप्त होने के बाद उसकी रूप-रेखा (ढाँचा) बना लें। रूप-रेखा बनाते समय क्रमबद्धता पर ध्यान दें।
3. पूरी निबंध-रचना को अनेक परिच्छेदों में विभक्ति कर लिखना चाहिए, किंतु ध्यान रहें एक परिच्छेद में एक ही भाव हो।
4. निबंध में सरल और प्रचलित शब्द, छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया जाए और कम से कम शब्दों में ज्यादा से ज्यादा भावों को प्रकट करने की कोशिश की जाए।
5. एक ही भाव या वाक्य बार-बार न दोहराए।
6. निबंध रचना में प्रभावोत्पादक शब्द-समूह, मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा बीच-बीच में विद्वानों या कविता की उक्तियाँ भी देनी चाहिए।
7. सुबोध, सुस्पष्ट, क्रमबद्धता, शुद्ध भाषा, वैयक्तिक प्रभाव और सरस शैली - इन बातों पर ध्यान देते हुए निबंध लिखना चाहिए।

(इ) निबंध के प्रकार

विषय-वस्तु के आधार पर हम निबंध के तीन प्रकार मान सकते हैं।

1. **वर्णनात्मक निबंध** - किसी वस्तु, दृश्य या स्थान का वर्णन कर देना ही वर्णनात्मक निबंध है।

त्योहार, मेला, यात्रा, नगर, खेल, महान लोग, विशेष प्राणी पर वर्णनात्मक निबंध लिखे जा सकते हैं।

2. **विवरणात्मक निबंध** - ये निबंध अधिकतर घटनात्मक होते हैं। इसमें घटनाओं का क्रमिक विवरण लिखा जाता है। विवरण के साथ लेखक अपनी कल्पना भी जोड़ता है। पौराणिक, ऐतिहासिक और आधुनिक कथा, यात्रा, संस्करण आदि के विषय में विवरणात्मक निबंध लिखा जाता है।

3. **विचारात्मक निबंध** - इन निबंधों के अंतर्गत अधिकतर बुद्धितत्व या विचार की प्रधानता होती है। इसमें भाव और आत्मीय तत्वों पर विचार किया जाता है। दया, ममता, करुणा, श्रद्धा, स्नेह, क्रोध, ग्लानि आदि विषयों पर विचारात्मक निबंध लिखे जाते हैं।

(ई) निबंध के विभाग

निबंध लिखने समय विषय-वस्तु को तीन भागों में विभाजित कर लिखना चाहिए। जैसे -

1. **प्रारंभ** - निबंध का प्रारंभ बहुत ही रोचक पद्धति और प्रभावशाली भाषा में करना चाहिए। इसमें संक्षिप्तता पर ध्यान देना चाहिए।

2. **विस्तार** - यह निबंध का मुख्य और विस्तारवाला भाग है। इसमें विषय-वस्तु को कोई छोटे-छोटे अनुच्छेदों में क्रमिक ढंग से लिखना चाहिए। प्रत्येक तत्व और विचार का समावेश इसमें होना चाहिए।

3. **उपसंहार** (समाप्ति) - इसमें निबंध का उद्देश्य, उसका आधुनिक जीवन में महत्व तथा भविष्य के लिए उपयोगिता आदि का संकेत करना चाहिए।

(उ) रूप-रेखा के साथ निबंध के नमूने

विषय - ''वर्षा ऋतु''

रूप-रेखा : 1. प्रस्तावना, (भूमिका), 2. प्राकृतिक सौंदर्य, 3. लाभ, 4. हानि, 5. उपसंहार।

वर्षा ऋतु

प्रस्तावना :

वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं- हेमंत, शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद। वसंत के बाद वर्षा ऋतु इनमें सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि यह चराचर जगत को जीवनदान देने वाली है। जेष्ठ और आषाढ़ की गर्मी से संपूर्ण धरती और उसके प्राणी प्यास और गर्मी से विकल हो उठते हैं। नदी-नाले, पोखरे, कुएँ आदि सूखने लगते हैं। पशु-पक्षी वर्षा रानी के वियोग में करुणा भरे स्वर से पुकारने लगते हैं। कृषकवर्ग वर्षा के आगमन की प्रतिक्षा में चातक के समान अपना कृषि-कार्य जल्दी करने लगते हैं।

आषाढ़ का महीना शुरू हुआ कि वर्षा रानी ने भी तृषित प्रकृति की प्यास बुझने का तैयारी कर ली, जो प्रकृति जलते हुए तवे के समान गरम थी, अब वर्षा होने से हरियाली की नई पोषाक पहन लेती है। संपूर्ण प्राणियों में एक नए और अनोखे आनंद की लहर दौड़ने लगती है।

प्राकृतिक सौंदर्य :

कोई भी ऋतु प्रकृति के साथ मिलकर ही शोभा पाती है। वर्षा ऋतु भी प्रकृति के साज-सिंगार में सहयोग देती है। प्रकृति और वर्षा ऋतु के इस आपसी समझौते से वातावरण बढ़ा ही मनमोहक लगता है। वन-बगीचे, खेत हरे-भरे हो जाते हैं। आसमान की मेघमाला प्रकृति-रमणी को और मादक बना देती है। सर-सरिता, ताल-तलैया, मस्ती में रिमझिम करते हैं और इसके साथ मयूर, चातक, दादुर आदि भी मस्त होकर आशा भरे मनोरम संगीत छेड़ देते हैं।

धरती का लाल और जगत का पालक कृष्ण तो आनंद से झूमने लगता है। मेघों का समूह और बूदों की बौछार उसको बलशाली और प्रफुल्लित बना रही है। वह भी वर्षा ऋतु के स्वागत में गीत गाते हुए हल लेकर निकल पड़ता है। बैलों और कृषकों का समूह खेतों में कैसे शोभा देते हैं ? मानो वर्षा रानी को दुल्हन बना कर नच रहे हों। जोती हुई जमीन की सोंधी महक हृदय को प्रफुल्लित कर देता है।

लाभ :

वर्षा ऋतु सभी ऋतुओं का राजा है, क्योंकि सृजन और पालन की क्षमता है। यदि वर्षा न हो तो संपूर्ण विश्व गर्मी की तपन में जल कर राख हो सकता है। अकाल से संपूर्ण जीव-जाति नष्ट हो सकती है। अन्न की उपलब्धि नहीं हो सकती। प्रकृति का शृंगार लूट सकता है। संपूर्ण ज्ञान-विज्ञान की उन्नति ठप हो सकती है। अतः वर्षा संपूर्ण जगत में रस और जीवन का सृजन करने ाली ऋतु है। संसार के प्राणियों का एक मात्र पोषक यह वर्षा ऋतु ही है।

हानि :

वर्षा ऋतु जीवनदायिनी है तो दूसरी ओर विनाशक भी है। अधिक वर्षा होने से नदियों में उफान आने लगता है और बाढ़ की तांडव-लीला से गाँव के गाँव बहे चले जाते हैं। अन्न से भरे हुए खेत नष्ट हो जाते हैं। यह दृश्य हम असम में प्रति वर्ष ब्रह्मपुत्र की तांडव-लीला के रूप में देखते हैं। बाढ़ के कारण अनेक विषैले प्राणी और संक्रामक रोग हमारे समाज के लिए शत्रु बन जाते हैं। गरीबों की रोजी-रोटी पर संकट आ जाता है। यातायात के मार्ग बंद हो जाते हैं। अतः वर्षा ऋतु का भाषण रूप संसार के प्राणियों को अपार क्षति भी पहुँचाता है।

उपसंहार :

संक्षेप में वर्षा ऋतु कल्याणकारी और मनोरम ऋतु है। थोड़ी-बहुत हानि भी सहन करके हम इसका स्वागत करते हैं। प्राचीन समय से ही हमारे भारतीय कवियों और ज्ञानियों ने अनेक ढंग से इसकी महिमा गायी है। कालिदास का 'मेघदूत' विश्व-प्रसिद्ध है। इसी प्रकार के शंकरदेव, उत्तर प्रदेश के तुलसीदास और महाराष्ट्र के तुकाराम ने वर्षा ऋतु का वर्णन बड़े ही मनोरम ढंग से किया है। नि:सन्देह वर्षा ऋतु चराचर जगत के लिए एक वरदान है।

अभ्यास

1. निबंध किसे कहते हैं ?
2. निबंध कितने प्रकार के होते हैं ?
3. वर्णनात्मक और विचारात्मक निबंधों में क्या अंतर है ?
4. निबंध लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?
5. निबंध के प्रमुख कितने भाग होते हैं ?
6. नीचे दी हुई रूप-रेखा के आधार पर 'वसंत ऋतु' पर एक निबंध लिखो।
   (क. प्रस्तावना, ख. प्राकृतिक सौंदर्य, ग. लाभ, घ. हानि, ङ. उपसंहार)

विशेष ज्ञान के लिए कुछ निबंध

1. हमारा विद्यालय

हमारे विद्यालय का नाम 'आनंदराम बरुवा हाईस्कूल' है। यह असम का आदर्श विद्यालय माना जाता है। सरकार ने इसकी स्थापना 1950 में महान विद्वान आनंदराम बरुवा की स्मृति में की। इसका भवन पक्का है।

हमारे विद्यालय का भवन आकर्षक और विशाल है। यह नगर से दो किलोमीटर दूर एक तालाब के किनारे है। इसके चारों ओर तांबूल, नारियल, कटहल, पीपल और बाँस के वृक्ष हैं। उत्तर दिशा की ओर एक सुंदर पहाड़ भी है। विद्यालय के पीछे एक नाला है। इसमें बारह महीने पानी बहता रहता है। विद्यालय की सीमा चारों ओर काँटेदार तारों से घिरी हुई है। विद्यालय के सामने एक बड़ा बरामदा है। इसमें तिरंगे झंडे का एक खंभा भी है। बगल में गुलाब के फूलों का एक सुंदर उद्यान है। विद्यालय के पीछे एक लंबा-चौड़ा मैदान है। इस मैदान में वालीबॉल, फुटबॉल, वास्केटबॉल, बैडमिंटन आदि खेला जाता है। मैदान की अंतिम सीमा पर लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय तथा मूत्रालय बने हुए है। वही थोड़ी दूर पर एक कुआँ है। विद्यालय का मुख्य भवन एक मंजिला ही है। इसमें कुल 20 कमरे हैं। 8 कमरों में कक्षाएँ लगती हैं। इनके अतिरिक्त एक कमरा प्रधान अध्यापक के लिए, एक कमरा अध्यापक वर्ग के लिए है। एक कमरे में कार्यालय, एक कमरे में भंडार घर तथा एक बड़े कमरे में पुस्तकालय है। दो बड़े कमरे लड़के और लड़कियों के सामूहिक रूप से बैठने के लिए है। पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए एक बड़ा वाचनालय कक्ष है। पीछे की ओर एक विशाल कक्ष है। इसमें सभा, नाटक आदि होते हैं। भवन के पीछे दो छोटे कमरे हैं। इनमें चौकीदार रहते हैं।

हमारे विद्यालय में कुल 400 छात्र-छात्राएँ पढ़ते हैं। सह-शिक्षा की व्यवस्था है। इसलिए 300 लड़कों के साथ 1000 लड़कियाँ भी पढ़ती हैं। सभी विषयों के पढ़ाने की व्यवस्था है। अध्यापक भी पर्याप्त हैं। 20 अध्यापक और एक प्रधान अध्यापक तथा कार्यालय के कर्मचारी मिलकर विद्यालय की उन्नति में लगे रहते हैं। तीन अध्यापक हिंदी पढ़ाते हैं। हिंदी भाषा को स्वेच्छा से अनेक छात्र पढ़ते हैं। प्रधान अध्यापक महोदय भी हिंदी शिक्षा पर ध्यान देते हैं, क्योंकि वह हमारी राष्ट्रभाषा है। कार्यालय में

मुख्य लिपिक, एक सहायक लिपिक, एक टंकक तथा रोकड़िया है। ये हमेशा विद्यालय के काम में सक्रिय रहते हैं।

हमारा पुस्तकालय बड़ा है, क्योंकि इसमें एक हजार पुस्तकें हैं और 90 पत्र-पत्रिकाएँ प्रतिदिन आती हैं। पुस्तकालय अध्यक्ष तथा एक पुस्तक-सहायक सदा इसकी उन्नति में लगे रहते हैं। हमारे विद्यालय में सच्चे सेवक हैं हमारे चतुर्थ वर्ग के कर्मचारी लोग। ये संख्या में कुल 7 हैं। 3 चपरासी, 2 चौकीदार, 1 सफाई वाला और 1 माली। ये हमेशा अपने कार्य में लगे रहते हैं, सफाई वाला वासुदेव है। यह विद्यालय को हमेशा साफ रखता है और माधव माली है। इसने तो विद्यालय की शोभा में चाँद लगा दिए हैं। उद्यान में ऐसे सुंदर-सुंदर फूल लगाए हैं, जो देखते ही बनते हैं। हमारे विद्यालय में कक्षा-व्यवस्था बड़ी अच्छी है। बैंच और डेस्क साफ़-सुथरी रहती है। वैसे विद्यालय में 8, 9, 10 प्रमुख तीन कक्षाएँ ही हैं। प्रत्येक कक्षा की तीन उपकक्षाएँ बना दी गई हैं। इससे बैठने और अध्ययन करने में सुविधा होती है।

हमारे विद्यालय में पूरे वर्ष सक्रियता रहती है। सभाएँ, गोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, राष्ट्रीय व सामाजिक त्योहार तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन होता रहता है। अध्यापक, छात्र और अभिभावक मिलकर समस्याओं को सुलझाते हैं। अध्यापकों का छात्रों से मधुर संबंध रहता है।

हम सामूहिक रूप में पिकनिक, भ्रमण, खेल गोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लेते हैं। यह आनंद बड़ा ही अनूठा होता है। हमारे विद्यालय का परीक्षाफल भी प्रत्येक वर्ष 60% प्रतिशत रहता है। दूसरे विद्यालयों से खेलों में 50-60 कप भी हम जीत लेते हैं। 15 दिन पहले ही हमने कामरूप विद्यालय को 4 गोल से फुटबॉल मैच में हरा दिया है। हमारे विद्यालय की लड़की सरोजबाला ने दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। तीन माह पहले हम उत्तर भारत भ्रमण के लिए गये थे।

सच्चे माने में हमारा विद्यालय असम का एक आदर्श विद्यालय है। क्योंकि इसकी संपूर्ण गतिविधियाँ अनुशासित और सक्रिय है। अध्यापक-अभिभावक-छात्र सब इस विद्यालय से प्यार रखते हैं और आस-पास का समाज इसे आदर्श रूप में मानता है।

2. लोकनायक शंकरदेव

समाज को सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से ऊपर उठाने वाले व्यक्ति ही लोकनायक या महापुरुष कहलाते हैं। भारत-भूमि लोकनायकों की भूमि रही है। प्राचीन काल में मर्यादा पुरुषोत्तम राम, लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण, सत्यवादी हरिश्चंद्र, दानवीर कर्ण, महान त्यागी गौतम बुद्ध, जगतगुरु शंकराचार्य आदि महान विभूतियों ने जन्म लिया था और विश्व में भारत को सांस्कृतिक केंद्र बनाया। मध्यकाल में मध्वाचार्य, वल्लभाचार्य, संत ज्ञानेश्वर, गुरु नानक, कबीर समन्वयवादी तुलसी, चैतन्य महाप्रभु और लोकनायक शंकरदेव आदि ने प्राचीन भारत की अमर गाथा की पूर्णस्थापना की। आज भी विश्व में भारत का अस्तित्व इन लोकनायकों के कारण बना हुआ है।

पूर्वी भारत के लोकनायक महापुरुष शंकरदेव का इतिहास हमारे लिए बड़ा ही प्रेरणादायक और अनुकरणीय है। बचपन में महापुरुष शंकरदेव को केवल 'शंकर' कहकर पुकारते थे। इनका जन्म सन् 1449 ई. में नगाँव जिले (असम राज्य) के बरदोवा गाँव में हुआ था। बचपन में तो उनका जीवन साधारण ही रहा, परंतु किशोरावस्था में उनके कार्यों से लोकनायकपन झलकने लगा। गुरु महेंद्र कंदली की शिक्षा और तत्कालीन परिस्थितियों ने शंकर को ''शंकरदेव'' बना दिया। शंकरदेव ने असम के गाँवों व नगरों में घूम-घूम कर सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक दृश्यों की विड़ंबनापूर्ण स्थिति देखी। वे यह सब विकृत रूप देखकर तिलमिला उठे। इसलिए वे ज्ञान की खोज में भारत के अन्य नगरों में पहुँचे। उन्होंने दो बार संपूर्ण भारत का भ्रमण किया। अपने उद्देश्य के लिए कई महापुरुषों से विचार-विमर्श किया। पंजाब के गुरु नानक, महाराष्ट्र के तुकाराम और उत्तर भारत के संत कबीर आदि के विचारों से प्रभावित होकर और समन्वयवादी वैष्णव पंथ की ज्योति लेकर पुनः असम आए। यहाँ उन्होंने सभी क्षेत्रों में सृजनात्मक कार्य आरंभ कर दिया। और 'कीर्तन-घोषा' की रचना की। श्रीमद्भागवत का असमीया में अनुवाद किया। अनेक

अंकीया नाट लिखे। नए-नए वाद्य-यंत्रों का प्रयोग होने लगा। सत्र तथा नामघरों की स्थापना होने लगी। शंकरदेव को पारिवारिक और राजनैतिक कष्ट भी भोगने पड़े, परंतु वे अपने प्रण पर डटे रहे। जब असमीया समाज को कीर्तन-घोषा और श्रीमद्भागवत जैसे अमूल्य ग्रंथ, अंकीया नाट, वाद्य-यंत्र, नामघर और शंकरदेव जैसे लोकनायक मिल गये, वह संपूर्ण रूप से मुग्ध होकर शंकरदेव के पंथ में निमग्न हो गया। शंकरदेव रंगमंच पर स्वयं अभिनय करते, गाते और बजाते थे। शास्त्रार्थ में उनके जैसा कोई विद्वान नहीं था। साहित्यकार, समाज सुधारक, भारतीय संस्कृति के रक्षक, वैष्णव धर्म के प्रचारक, उपदेशक, गायक, नर्तक, वादक आदि बहुमुखी प्रतिभाओं से भरपूर यह महान लोकनायक इस भारत भूमि पर 120 वर्ष तक असमीया समाज के उत्थान के लिए जुटा रहा। सन 1569 ई. को वे इस संसार से चल बसे।

महापुरुष शंकरदेव के अथक प्रयास से संपूर्ण असम में वैष्णव धर्म की तूती बोलने लगी। नामघरों की स्थापना और कीर्तन-घोषा, श्रीमद्भागवत को पढ़ना एक आम रिवाज हो गया। अंकिया नाट से असमीया रंगमंच में एक नयी क्रांति आ गयी। वाद्य-यंत्र, वेशभूषा, नृत्यकला आदि में भारतीय संस्कृति को महत्व दिया गया। भारतीय संस्कृति का स्वर्णयुग असम में पुन: प्रतिष्ठित हो गया। आज शंकरदेव का स्वर्गवास हुए लगभग 450 वर्ष हो गए हैं। फिर भी वे अपने कार्यों के द्वारा अमर हैं। जिस प्रकार शंकरदेव ने समाज का नायकत्व किया, इतने सजीव और सक्रिय तथा नैतिक ढंग से शायद ही किसी महापुरुष ने कभी किया हो। अत: निस्संदेह विभिन्न प्रतिभायुक्त महापुरुष शंकरदेव पूर्वी भारत के एकमात्र लोकनायक थे। आज भारतीय लोगों का कर्तव्य है कि वे इस महान लोकनायक के कार्यों को आगे बढ़ाएं।

3. श्रेष्ठ पशु – 'गाय'

विश्व में अनेक प्रकार के पशु पाए जाते हैं और सब की अपनी विशेषताएँ हैं। टुंड्रा के लोगों के लिए रेंडियर, रेगिस्तान के लोगों के लिए ऊँट, पाश्चात्य लोगों के लिए कुत्ते, कृषकों के लिए बैल, बोझा ढोने वाले के लिए खच्चर या गधे, हिंदुओं के लिए गाय का संबंध किसी न किसी कार्य या सिद्धांत पर आधारित है।

यदि हम तटस्थ-नीति से सर्वश्रेष्ठ पशु का निर्णय करें तो 'गाय' ही विश्व के सभी लोगों द्वारा सर्वश्रेष्ठ मानी जाएगी। भारत में हिंदुओं ने गाय का संबंध हिंदू जाति और हिंदू धर्म के साथ जोड़ा है, किंतु आज स्वयं हिंदू ही गो-पालन कार्य से उदासीन होते जा रहे हैं।

गाय सच्चे अर्थों में विश्व में सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि इसके दूध का पृथ्वी पर सर्वत्र महत्व है। दुनिया के बड़े-बड़े डॉक्टरों ने गाय के दूध को मानव के लिए बहुत ही गुणकारी माना है। बच्चों के लिए तो इसका दूध माँ के दूध जैसा ही है। गाय का भोलापन भी हमारे लिए बहुत ही अनोखा है। उसका रूप-रंग भी बड़ा आकर्षक होता है। लाल, सफेद, काली, चितकबरी गायें हमारे मन को लुभा लेती हैं। ऊँचाई में भी कुछ गायें 7-8 फीट तक ऊँची होती हैं। यूरोप की गायें सुंदर, हृष्ट-पुष्ट और ऊँची होती हैं। वहाँ की एक गाय 40 लिटर तक दूध देती है। उनका पालन-पोषण भी वहाँ बहुत तरह होता है। हमारे भारत में पंजाब, हरियाना और उत्तर प्रदेश की गायें ऊँची, हृष्ट-पुष्ट और अधिक दूध देने वाली होती हैं।

गाय से हमें अनेक लाभ हैं। इसके बछड़े बड़े होकर बैल होते हैं, जो खेती के काम में आते हैं। भारत में खेती का भार बैलों पर ही है। गाय के गोबर से खाद बनायी जाती है, जो अधिक पैदा होने में सहायक है। गरीबों के मकानों की लिपाई-पुताई में गोबर बहुत उपयोगी होता है। गाय जब तक जीवित रहती है, मानव-समाज की सेवा करती है, परंतु मरने के बाद भी यह अपने शरीर को मानव-समाज के उपयोग के लिए दे जाती है, क्योंकि इसके चमड़े से जूते बनाये जाते हैं और इसके हड्डी से खाद बनायी जाती है। जूते मानव के पैरों की रक्षा करने में तथा खाद अधिक अन्न उपजाने में सहायक हैं।

अत: गाय मानव के लिए बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। अपने असीमित गुणों के कारण यह विश्व के लोगों की माता के समान है। आज यह हमारा पुनीत कर्तव्य है कि इस उपयोगी और सर्वश्रेष्ठ पशु की रक्षा करें।

4. राष्ट्र और विद्यार्थी

'जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् जननी जन्मभूनि स्वर्ग से भी महान होती है। हमारी जन्मभूमि का ही दूसरा नाम भारतभूमि है। भारत राष्ट्र में असम से गुजरात और कश्मीर से तमिलनाडु तक की सम्पूर्ण भूमि आ जाती है। प्राचीन समय से ही इस राष्ट्र की रक्षा, उन्नति और विकास के लिए असंख्य लोगों ने आत्मोत्सर्ग किया है। इन लोगों में विद्यार्थियों का योगदान सबसे अधिक रहा। भारतीय ऋषियों ने राष्ट्र के विकास के लिए मनुष्य की एक अवस्था में रह कर विद्यार्थी 24 वर्ष तक विद्याध्ययन और समाज-सेवा करते थे। उनकी यह सेवा राष्ट्र के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण थी। आर्य उदयन, भुवनविक्रम, श्रीकृष्ण आदि महान विद्यार्थियों में से थे।

वर्तमान भारत में विद्यार्थियों पर जब हम एक विहंगम दृष्टि डालते हैं तो चारों ओर निराशा दिखायी देती है। आज का विद्यार्थी प्राय: अनुशासनहीन, अकर्मण्य, पाश्चात्य सभ्यता में निमग्न होकर अपने राष्ट्र को भूलता जा रहा है। वह अपने ही राष्ट्र की वस्तुओं को शत्रु राष्ट्र की वस्तु जैसा मानता है। राष्ट्रीय संपदा को नष्ट करने के लिए तैयार हो जाता है। भारतीय संस्कृति की हँसी उड़ाता है। राष्ट्र के कर्णाधारों और विद्वानों पर व्यंग करता है। वह न तो समाज से मेल रखता है और न परिवार में ही आस्था रखता है। माता-पिता-गुरु की बातों पर विश्वास नहीं करता। अध्ययन में अरुचि और वेशभूषा का भक्त हो जाता है। यह सब देख कर समाज को आशंका होने लगी है कि यदि भारतीय विद्यार्थी इसी पथ पर चलते हैं तो हमारी यह पवित्र भूमि फिर विदेशियों के हाथ में चली जाएगी। संपूर्ण राष्ट्र अवनति की ओर चला जाएगा और हमारा प्राचीन वैभव, संस्कृति तथा उद्योग धंधे सब नष्ट हो जाएंगे।

आज का विद्यार्थी इस प्रकार आशाहीन, अभावग्रस्त, उदासीन, अनुशासनहीन, अकर्मण्य क्यों होता जा रहा है ? इस विषय पर विद्यार्थियों को मिल कर सोचना है और मिल कर निर्णय लेना है। वह निर्णय होगा राष्ट्र सेवा से। राष्ट्र के लिए मरना और राष्ट्र के लिए ही जीना। यह मूल मंत्र सभी विद्यालयों की जिह्वा पर होना चाहिए। राष्ट्र जब टूट रहा हो, अवनति की ओर जा रहा हो, तब इसे केवल विद्यार्थी ही जोड़ सकता है। आज का विद्यार्थी ही भविष्य में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, न्यायाधीश, वकील, अध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनेगा। देश-निर्माण का भार इनके ही कंधे पर आएगा। इसलिए यदि विद्यार्थी अपने जीवन को कर्मण्य, अनुशासित, विनम्र और उन्नतिशील बनाए तो वह राष्ट्र-निर्माण में अविरल रूप से काम करने वाला बनेगा और संपूर्ण भारतीय ामाज को एक नयी दिशा दे सकेगा।

आज हम सब मिलकर यह निर्णय ले कि हम राष्ट्र के लिए जिएँगे। हमारे लिए पहले राष्ट्र होगा फिर प्रांत या घर होगा। समय पर पढ़ेंगे, गुरुजनों पर श्रद्धा रखेंगे और अनुशासन में रहेंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि से भाग लेंगे तथा अपनी संस्कृति की उन्नति और रक्षा के लिए हम प्राणपण से कार्य करेंगे।

यदि हम विद्यार्थीगण उपयुक्त निर्णयों के कार्य करें तो निश्चित ही राम, कृष्ण, शंकरदेव, लाचित बरफुकन, गांधी, नेहरू की यह भारतभूमि संसार के राष्ट्रों में सर्वोच्च होगी और हम भारतीय धन-धान्य से पूर्ण सफल जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

5. राष्ट्रभाषा का महत्व

'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा होता है' अर्थात् जिस राष्ट्र के पास अपनी कोई एक भाषा न हो, उस राष्ट्र का दुनिया में कोई महत्व नहीं है। संसार के सभी राष्ट्रों के पास अपनी-अपनी राष्ट्रभाषा है। हमारे देश में अनेक भाषाएँ बोली, लिखी व पढ़ी जाती हैं, जिनमें असमीया, मणिपुरी, बंगला, उड़िया, तमील, तेलेगू, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, सिंधी, कश्मीरी, पंजाबी, हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाएँ भारत की निधि हैं, परंतु इनमें वे सभी गुण नहीं हैं, जो कि एक राष्ट्रभाषा के लिए होना चाहिए। हिंदी भारत के सात राज्यों की सरकारी भाषा है। भारत के करोड़ों लोग हिंदी बोलते हैं। इसका विशाल साहित्य है। असम, आंध्र, महाराष्ट्र, गुजरात, कश्मीर, पंजाब जैसे अहिंदी प्रदेशों के लोग इसे हृदय से राष्ट्रभाषा मान चुके हैं। भारत के सभी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की सुविधा है और विश्व में लगभग 150 विश्वविद्यालयों में भी हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है। केंद्रीय सरकार का अधिकांश काम हिंदी में ही चलता है।

हिंदी के सर्वभारतीय महत्व को देखते हुए महात्मा गांधी ने इसे राष्ट्रभाषा घोषित करते हुए सारे अहिंदी अंचल में इसका व्यापक प्रचार करवाया था।

इसके व्यापक गुणों को देखकर ही राष्ट्र के कर्णाधारों ने 14 सितंबर 1949 में एकमत से हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता दी और राष्ट्रभाषा हिंदी अपने पथ की ओर अविरल गति से बढ़ रही है।

राष्ट्रभाषा के महत्व को समझते हुए आज हमारा कर्तव्य है कि इसके गौरव को आगे बढ़ाएं, क्योंकि अपनी राष्ट्रभाषा को यदि हम उन्नति की ओर ले जाएंगे तो राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ होगी। हम अपने विचारों को अपने बंधुओं के सामने प्रकट कर सकेंगे। नौकरी आदि प्राप्त करने में हमें सहायता मिलेगी। भारत की अन्य भाषाओं का विकास होगा।

आज से हम सभी मिलकर राष्ट्रभाषा की उन्नति के लिए निश्चय करें। राष्ट्रीय कार्यों में हिंदी की प्रयोग करें। इससे राष्ट्रभाषा अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विश्व में स्थान ग्रहण कर सकती है। राष्ट्रीय एकता के साथ भारतीय संस्कृति विकास होगा। इस राष्ट्रीय कार्य का भार विद्यार्थियों के ऊपर है और इसको पूर्ण करना हमारा पुनीत कर्तव्य है।

अभ्यास

1. प्रस्तुत रूपरेखा के आधार पर निम्नलिखित निबंध लिखो।

(क) अपना विद्यालय

(i) प्रस्तावना, विद्यालय का नाम, स्थिति

(ii) विद्यालय भवन का वर्णन

(iii) विद्यालय के कर्मचारी, छात्र का परिचय

(iv) विद्यालय का सक्रियता

(ख) महापुरुष शंकरदेव

(i) प्रस्तावना, महापुरुष और भारत

(ii) .शंकरदेव की जीवनी

(ii) शंकरदेव के कार्य

(iv) उपसंहार, शंकरदेव का देश पर प्रभाव

DAILY ASSAM

(ग) उपयोगी पशु घोड़ा

(i) प्रस्तावना, अन्य पशुयों से घोड़े का महत्व अधिक होने के कारण।

(ii) घोड़े का परिचय

(ii) घोड़े से लाभ

(iv) उपसंहार, घोड़े के प्रति हमारा कर्तव्य

(घ) विद्यार्थी जीवन

(i) प्रस्तावना, विद्यार्थी जीवन का इतिहास

(ii) विद्यार्थी जीवन का परिचय

(ii) विद्यार्थी जीवन का महत्व

(iv) उपसंहार, समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य

(ङ) राष्ट्रभाषा का महत्त्व

(i) प्रस्तावना, मातृभाषा का अर्थ

(ii) मातृभाषा और हम

(ii) मातृभाषा का महत्व

(iv) उपसंहार, मातृभाषा से भविष्य में विकास।